पाठ 11 प्रहलाद अग्रवाल (तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र)

प्रश्न – अभ्यासः

प्रहलाद अग्रवालः हिंदी सिनेमा के इतिहासकार और समीक्षक

"प्रहलाद अग्रवाल का जीवन परिचय"

प्रहलाद अग्रवाल भारतीय सिनेमा के प्रसिद्ध इतिहासकार, लेखक और शिक्षक हैं। इनका जन्म मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर में हुआ। उन्होंने हिंदी साहित्य में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और किशोरावस्था से ही फिल्मों के इतिहास, फिल्मकारों के जीवन और अभिनय पर गहरी रुचि रखी।

वर्तमान में, वे सतना के शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने हिंदी सिनेमा पर कई पुस्तकें लिखी हैं और फिल्म जगत से जुड़े व्यक्तित्वों पर गहन शोध किया है।

प्रहलाद अग्रवालः शैक्षणिक और पेशेवर जीवन

प्रहलाद अग्रवाल ने हिंदी साहित्य में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत शिक्षण के क्षेत्र में की और वर्तमान में सतना के शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं।

उनका पेशेवर जीवन शिक्षा और सिनेमा लेखन के बीच संतुलित रहा है। उन्होंने हिंदी फिल्मों के इतिहास, निर्देशकों, अभिनेताओं और संगीतकारों पर गहन शोध किया तथा कई पुस्तकें लिखीं, जो हिंदी सिनेमा के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। शिक्षण के साथ-साथ उनका लेखन कार्य भी निरंतर जारी है।

प्रहलाद अग्रवाल का साहित्यिक योगदान

प्रहलाद अग्रवाल ने हिंदी सिनेमा के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत लेखन किया है। उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं:

1. राजकपूरः आधी हकीकत आधा फसाना

इस पुस्तक में राजकपूर के जीवन, उनकी फिल्मों की कहानियों और उनके सिनेमाई योगदान का विश्लेषण किया गया है।

2. प्यासाः चिर अतृप्त गुरुदत्त

गुरुदत्त की जीवनी और उनकी फिल्म "प्यासा" पर आधारित यह पुस्तक उनके सिनेमाई दर्शन को समझने में मदद करती है।

3. कवि शैलेंद्रः जिंदगी की जीत में यकीन

हिंदी फिल्मों के मशहूर गीतकार शैलेंद्र के जीवन और उनके योगदान पर यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

4. ओ रे माँझी: बिमल राय का सिनेमा

बिमल राय की फिल्म निर्माण शैली और उनके योगदान पर यह पुस्तक हिंदी सिनेमा के इतिहास में एक मील का पत्थर है।

5. महाबाजार के महानायक: इक्कीसवीं सदी का सिनेमा

यह पुस्तक आधुनिक हिंदी सिनेमा के बदलते स्वरूप और उसके प्रभावों पर प्रकाश डालती है।

प्रहलाद अग्रवाल का सिनेमा पर विशेष योगदान

प्रहलाद अग्रवाल हिंदी सिनेमा के प्रमुख इतिहासकार और समीक्षक हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय फिल्म जगत को गहराई से समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका योगदान निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है:

1. फिल्म इतिहास और शोध को बढ़ावा

- उन्होंने राजकपूर, गुरुदत्त, बिमल राय और शैलेंद्र जैसे दिग्गज फिल्मकारों पर विस्तृत पुस्तकें लिखकर हिंदी सिनेमा के इतिहास को संरक्षित किया।
- उनकी कृतियाँ फिल्म निर्माण, कहानी-लेखन और अभिनय की बारीकियों को समझने में मदद करती हैं।

2. सिनेमाई विरासत का दस्तावेजीकरण

- उनके लेखन में फिल्मों के सामाजिक, सांस्कृतिक और कलात्मक पहलुओं का गहन विश्लेषण मिलता है।
- पुस्तकें जैसे "प्यासा: चिर अतृप्त गुरुदत्त" और "ओ रे माँझी: बिमल राय का सिनेमा" हिंदी सिनेमा की विरासत को समर्पित हैं।

3. शैक्षणिक और साहित्यिक प्रभाव

- एक प्राध्यापक के रूप में, उन्होंने युवाओं को सिनेमा के इतिहास और कला से जोड़ने का कार्य किया।
- उनकी रचनाएँ शोधार्थियों और फिल्म प्रेमियों के लिए एक संदर्भ स्रोत के रूप में काम करती हैं।

प्रहलाद अग्रवाल का कार्य न केवल हिंदी सिनेमा के अध्ययन को समृद्ध करता है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसकी धरोहर को सुरक्षित रखने में भी सहायक है।

प्रहलाद अग्रवाल का संपादन कार्य

प्रहलाद अग्रवाल ने 'प्रगतिशील वसुधा' पत्रिका के सिनेमा विशेषांक का संपादन किया। इस विशेषांक में हिंदी सिनेमा के इतिहास, विकास और विभिन्न पहलुओं पर गहन लेख शामिल हैं। यह संपादन कार्य हिंदी फिल्म शोध एवं आलोचना के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है, जिससे सिनेमा के अकादमिक अध्ययन को नई दिशा मिली।

प्रहलाद अग्रवाल: सम्मान और मान्यता

प्रहलाद अग्रवाल को हिंदी सिनेमा के इतिहास और विश्लेषण में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए विभिन्न साहित्यिक और सिनेमाई हलकों में सम्मानित किया गया है। उनकी पुस्तकों ने न केवल शोधार्थियों और फिल्म प्रेमियों, बल्कि आलोचकों का भी ध्यान आकर्षित किया है।

प्रमुख सम्मान एवं पहचान:

- उनकी किताबें हिंदी सिनेमा के अध्ययन में संदर्भ ग्रंथ के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुकी हैं।
- विभिन्न साहित्यिक संगोष्ठियों और फिल्म समारोहों में उन्हें आमंत्रित किया जाता है।
- हिंदी सिनेमा पर उनके शोध को शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ाया जाता है।
- सिनेमा जगत के विद्वानों और आलोचकों द्वारा उनके कार्य की व्यापक सराहना की गई है।

प्रहलाद अग्रवाल का कार्य हिंदी सिनेमा की विरासत को सहेजने और उसके गहन अध्ययन में एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

प्रहलाद अग्रवाल की लेखन शैली

प्रहलाद अग्रवाल की लेखन शैली शोधपरक, सरल और पठनीय है। वे फिल्मों के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को गहराई से समझाते हैं। उनकी भाषा स्पष्ट और प्रभावी है, जिससे पाठक आसानी से जुड़ पाते हैं।

निष्कर्ष

प्रहलाद अग्रवाल हिंदी सिनेमा के इतिहास और उसके नायकों पर गहन शोध करने वाले एक महत्वपूर्ण लेखक हैं। उनकी पुस्तकें न केवल सिनेमा प्रेमियों के लिए बल्कि शोधार्थियों के लिए भी उपयोगी हैं। उनका कार्य हिंदी सिनेमा की विरासत को संजोने और समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मौखिक-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. 'तीसरी कसम' फ़िल्म को कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है?

www.ncertsolutionhub.in

उत्तर **1**: 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक, बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार और कई अन्य सम्मान मिले थे।

प्रश्न 2. शैलेंद्र ने कितनी फ़िल्में बनाई?

उत्तर **2**: शैलेंद्र ने केवल एक फ़िल्म का निर्देशन किया, और वह थी "तीसरी कसम"।

प्रश्न 3. राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फ़िल्मों के नाम बताइए ।

उत्तर **3**: राजकपूर ने कई प्रमुख फ़िल्मों का निर्देशन किया, जिनमें "संगम", "मेरा नाम जोकर", "अजन्ता मैं", "मेरा दोस्त", और "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" शामिल हैं।

प्रश्न 4. 'तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक व नायिकाओं के नाम बताइए और फ़िल्म में इन्होंने किन पात्रों का अभिनय किया है?

उत्तर **4**: 'तीसरी कसम' के नायक राजकपूर और नायिका वहीदा रहमान थीं। राजकपूर ने हीरामन और वहीदा रहमान ने हीराबाई का पात्र निभाया।

प्रश्न 5. फ़िल्म 'तीसरी कसम का निर्माण किसने किया?

उत्तर **5**: 'तीसरी कसम' का निर्माण शैलेंद्र ने किया था।

प्रश्न 6. राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी?

उत्तर **6**: राजकपूर को इस बात की कल्पना नहीं थी कि इस फ़िल्म को बनाने में छह साल का समय लग जाएगा।

प्रश्न 7. राजकपूर की किस बात पर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया?

उत्तर **7**: जब राजकपूर ने शैलेंद्र से कहा कि "मुझे एडवांस में पारिश्रमिक देना होगा", तो यह सुनकर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया।

प्रश्न 8. फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे?

उत्तर **8**: फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को एक कला मर्मज्ञ, और आँखों के जरिए संवाद करने वाले कलाकार के रूप में मानते थे।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. 'तीसरी कसम' फ़िल्म को 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' क्यों कहा गया है?

उत्तर 1: इस फ़िल्म में राजकपूर ने अपनी सबसे बेहतरीन भूमिका निभाई है। 'तीसरी कसम' केवल एक फ़िल्म नहीं, बल्कि एक साहित्यिक कृति है जिसे सैल्यूलाइड पर पूरी संवेदना और सार्थकता के साथ प्रस्तुत किया गया। यह फ़िल्म हिंदी साहित्य की एक मार्मिक रचना को सिनेमा में जीवित करने वाली थी, जिससे इसे 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' कहा गया।

प्रश्न 2. 'तीसरी कसम' फ़िल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे?

उत्तर 2:

(i) यह फ़िल्म गहरी संवेदना पर आधारित थी, और इसकी साहित्यिक जड़ें इतनी गहरी थीं कि आम दर्शक के लिए इसे समझना आसान नहीं था। इस फ़िल्म की संवेदनाओं को केवल उन्हीं लोगों द्वारा समझा जा सकता था, जो कला और साहित्य से जुड़े होते। इसलिए इसके व्यापारिक दृष्टिकोण से लाभ की संभावना कम दिखती थी।

(ii) इस फ़िल्म का करुणा और गहरी भावनाओं पर आधारित होना भी एक कारण था। अधिकतर लोग इसे असफल समझ रहे थे और इस कारण इसके खरीदार नहीं मिल रहे थे।

प्रश्न 3. शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है?

उत्तर 3:

(i) शैलेंद्र का मानना था कि कलाकार का कर्तव्य है कि वह दर्शकों की रुचियों को उच्च बनाने की कोशिश करे।

(ii) उनका यह भी कहना था कि दर्शकों की रुचियों का बहाना बनाकर उथलेपन को उनके ऊपर थोपना गलत है। कलाकार को अपनी असलियत और भावनाओं के प्रति सच्चा रहना चाहिए।

प्रश्न 4. फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफाई क्यों कर दिया जाता है?

उत्तर 4:

(i) फ़िल्मों में त्रासदी का चित्रण कभी-कभी वास्तविकता से दूर होता है। यह एक प्रकार से बढ़ा-चढ़ाकर दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

(ii) हालांकि इससे दर्शकों की भावनाओं का शोषण होता है, लेकिन फ़िल्म के ऐसे दृश्य दर्शकों को आकर्षित करते हैं और यह फ़िल्म को अधिक दर्शक संख्या हासिल करने में मदद करते हैं।

प्रश्न 5. 'शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं। इस कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 5:

(i) राजकपूर एक बहुत भावुक व्यक्ति थे, लेकिन उनके विशाल व्यक्तित्व के कारण उनकी भावनाएँ कभी बाहर नहीं आ पाती थीं।

(ii) शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' में राजकपूर के व्यक्तित्व और उनके छुपे हुए भावनाओं को इस प्रकार व्यक्त किया कि दर्शक उनकी भावनाओं को समझ सके और महसूस कर सकें।

प्रश्न 6. लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर 6:

(i) शोमैन वह होता है जो सिनेमा के पर्दे पर एक आदर्श के रूप में दिखाई देता है। उसका अभिनय दर्शकों को आकर्षित करता है और वह पर्दे पर एक विशिष्ट पहचान बनाता है।

(ii) राजकपूर को 'एशिया का सबसे बड़ा शोमैन' कहा गया क्योंकि उन्होंने 'तीसरी कसम' जैसी फ़िल्म में अपने अभिनय से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

प्रश्न 7. फ़िल्म 'तीसरी कसम' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की?

उत्तर 7:

(i) जय किशन का मानना था कि सामान्य जनता केवल चार दिशाओं को ही जानती है, जबकि दस दिशाएँ एक काल्पनिक विचार हैं। इसलिए, उन्होंने इसे 'चार दिशाओं' करने का सुझाव दिया।

(ii) शैलेंद्र का मानना था कि दर्शकों की रुचि को उथलेपन में न बदलकर गहराई से जुड़ा रहना चाहिए। उन्हें लगता था कि यह लाइन अपनी कवि संवेदना को अधिक सजीव बनाए रखेगी।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. राजकपूर द्वारा फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फ़िल्म क्यों बनाई ?

उत्तर **1:** (i) राजकपूर का दृष्टिकोण - राजकपूर एक अनुभवी अभिनेता, निर्माता और निर्देशक थे। उन्हें फिल्म उद्योग में असफलताओं का अच्छा खासा अनुभव था। शैलेंद्र ने इससे पहले कोई फिल्म नहीं बनाई थी, और 'तीसरी कसम' उनकी पहली फिल्म थी। जब शैलेंद्र ने यह फिल्म बनाने का प्रस्ताव राजकपूर के सामने रखा, तो उन्होंने इसकी कहानी को सराहा, लेकिन फिल्म की असफलता के संभावित खतरे के बारे में भी चेताया।

(ii) सफलता में विश्वास - शैलेंद्र को अपनी फिल्म की सफलता पर पूरा विश्वास था। इस विश्वास के कारण उन्होंने अपने फैसले पर अडिग रहते हुए फिल्म बनाई, जो अंततः बेहद सफल साबित हुई।

प्रश्न 2. 'तीसरी कसम' में राजकपुर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर **2:** (i) कुशल अभिनय - राजकपूर का व्यक्तित्व 'तीसरी कसम' फिल्म तक बहुत ही विशाल और प्रतिष्ठित हो चुका था। वह एशिया के सबसे महान शोमैन के रूप में प्रसिद्ध थे। इस बड़े व्यक्तित्व को उन्होंने पूरी तरह से देहाती भुच्च गाड़ीवान के रूप में प्रस्तुत किया, और अपने अभिनय में अपनी पूरी ऊर्जा लगा दी।

(ii) किरदार में समायोजन - फिल्म में राजकपूर कहीं से भी राजकपूर नजर नहीं आते, बल्कि पूरी तरह से हीरामन के रूप में ढल जाते हैं। उनका अभिनय उस हद तक गहराई में था कि वह केवल हीरामन के रूप में ही नहीं, बल्कि उसी के अस्तित्व में समाहित हो गए थे।

प्रश्न 3. लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है?

उत्तर **3:** (i) साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्मों की असफलता - 'तीसरी कसम' एक साहित्यिक रचना पर आधारित सफल फिल्म है, जिसकी पटकथा प्रसिद्ध लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने लिखी थी। जबकि फिल्म जगत में कई फिल्में साहित्यिक रचनाओं पर आधारित होती हैं, अधिकतर निर्माता इन रचनाओं को अपने हिसाब से ग्लोरिफाई कर देते हैं, जिससे उनकी मौलिकता छिप जाती है और फिल्म असफल हो जाती है।

(ii) मौलिकता का सम्मान - 'तीसरी कसम' में फिल्म निर्माताओं ने कहानी की मूल भावना को बनाए रखा और इसे अतिरिक्त महिमामंडित किए बिना दर्शाया। इस कारण फिल्म ने साहित्यिक रचना के साथ पूरी तरह से न्याय किया।

प्रश्न 4. शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर **4:** (i) हृदयस्पर्शी गीत - शैलेंद्र ने सिनेमा के व्यस्त और चकाचौंध वातावरण के बावजूद ऐसे गीत रचे जो सीधे दिल को छू जाते हैं।

(ii) प्रेरणादायक गीत - उनके गीत, जो करुणा और मधुरता से भरपूर होते हुए भी, जीवन की कठिनाइयों से लड़ने की प्रेरणा देते हैं। इनमें वह शक्ति है जो किसी को भी उसकी मंजिल तक पहुंचने के लिए प्रेरित कर सकती है।

प्रश्न 5. फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर **5:** (i) कुशल गीतकार - शैलेंद्र एक महान कवि और गीतकार थे, लेकिन फिल्म निर्माता के रूप में उन्होंने केवल एक ही फिल्म बनाई। वह सिनेमा की चमक-धमक से कभी आकर्षित नहीं हुए।

(ii) यथार्थ को चित्रित करना - शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' के माध्यम से सिनेमा को साहित्य से जोड़ने का प्रयास किया और यह फिल्म यथार्थ पर आधारित थी। यही कारण था कि उन्होंने इसे अपनी पहली और आखिरी फिल्म के रूप में प्रस्तुत किया।

प्रश्न 6. शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फ़िल्म में भी झलकती है - कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **6:** (i) संवेदनशीलता - शैलेंद्र एक संवेदनशील कवि थे, जो फिल्म जगत में गीतकार के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने 'तीसरी कसम' फिल्म बनाई, जिसकी कलात्मकता को खूब सराहा गया, और इसमें उनकी संवेदनशीलता साफ नजर आती है।

(ii) भावुकता - शैलेंद्र का व्यक्तित्व एक भावुक कवि का था, और यही भावनाएँ उनके गीतों और फिल्मों में साफ तौर पर दिखाई देती हैं।

प्रश्न 7. लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फ़िल्प कोई सच्चा कवि हृदय ही बना सकता था, आप कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **7:** (i) अन्य व्यक्तियों द्वारा निर्माण - अगर 'तीसरी कसम' को कोई अन्य व्यक्ति बनाता तो वह इसे ग्लोरिफाई करने के चक्कर में उसकी साहित्यिक मौलिकता को खो देता और फिल्म में फिल्मी रंग भर देता।

(ii) कवि हृदय द्वारा निर्माण - शैलेंद्र ने इस फिल्म में साहित्यिक और कलात्मकता की पूरी तरह से रक्षा की। इसलिए लेखक का यह कहना सही है कि 'तीसरी कसम' एक सच्चे कवि हृदय ही बना सकता था।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।

उत्तर 1: आशय- शैलेंद्र ने जब राजकपूर से 'तीसरी कसम' बनाने के लिए कहा तो उन्होंने यह स्पष्ट किया कि उन्हें धन और यश की कोई चिंता नहीं थी। वे एक आदर्शवादी कवि थे जो केवल आत्म संतुष्टि चाहते थे, न कि किसी व्यावसायिक सफलता की उम्मीद। उन्हें फिल्म की सफलता- असफलता से कोई फर्क नहीं पड़ता था, उनका उद्देश्य सिर्फ कला के माध्यम से संतुष्टि प्राप्त करना था।

2. उनका यह दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

उत्तर 2: आशय- जब शंकर जयकिशन ने शैलेंद्र से गीत में 'चार दिशाओं' लिखने का अनुरोध किया, तो उन्होंने इस पर दृढ़ रहते हुए कहा कि यदि दिशाएँ दस हैं, तो 'चार' लिखना गलत होगा। उनका मानना था कि दर्शकों की रुचियों का ध्यान रखते हुए हमें सही और ईमानदारी से काम करना चाहिए। एक कलाकार का कर्तव्य है कि वह उपभोक्ता की रुचियों को सुधारने का प्रयास करे और उच्च आदर्शों को बनाए रखे।

3. व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।

उत्तर 3: आशय- शैलेंद्र के गीतों में केवल दुख का निरूपण नहीं है, बल्कि जीवन से संघर्ष और आगे बढ़ने का संदेश भी है। उनका मानना था कि दुःख और पीड़ा हमें पराजित नहीं करते, बल्कि वे हमें अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इसका अर्थ यह है कि व्यथा हमें जीवन के वास्तविक पहलुओं से परिचित कराती है और हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

4. दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।

उत्तर 4: आशय- जब इस फिल्म को रिलीज़ किया गया, तो इसे दर्शकों द्वारा कम पसंद किया गया, क्योंकि इस फिल्म की संवेदनाओं को वे लोग समझ नहीं पाए जो केवल मुनाफ़े का हिसाब लगाते हैं। लेखक का कहना है कि इस फिल्म की संवेदनशीलता उन लोगों की समझ से बाहर थी, जो केवल लाभ के बारे में सोचते हैं।

5. उनके गीत भाव- प्रवण थे- दुरूह नहीं।

उत्तर 5: आशय- लेखक ने यह कहा कि शैलेंद्र के गीतों में भावनाओं का प्रमुख स्थान था। ये गीत सरल थे, जो आसानी से समझे जा सकते थे, और हृदय को छूने वाले थे।

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. पाठ में आए 'से' के विभिन्न प्रयोगों से वाक्य की संरचना को समझिए ।

(क) राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र की हैसियत से शैलेंद्र को फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह भी किया।

(ख) रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ ।

(ग) फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ थे।

(घ) दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने के गणित जानने वाले की समझ से परे थी ।

(ङ) शैलेंद्र राजकपूर की इस याराना दोस्ती से परिचित तो थे ।

उत्तर 1- 'से' का प्रयोग हिंदी में विभिन्न रूपों में होता है, और इसके प्रयोग से वाक्य की संरचना में अलग-अलग अर्थ निकलते हैं। नीचे दिए गए वाक्य में 'से' के विभिन्न प्रयोगों का विश्लेषण किया गया है:

(क) राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र की हैसियत से शैलेंद्र को फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह भी किया।

- प्रयोग: 'से' का प्रयोग यहाँ साधारण अर्थ में किया गया है, जहाँ 'से' का मतलब है "के रूप में" या "के दृष्टिकोण से"। इसका अर्थ है कि राजकपूर ने शैलेंद्र को एक मित्र के रूप में फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह किया।

(ख) रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ ।

- प्रयोग: यहाँ 'से' का प्रयोग स्रोत या दिशा को दर्शाने के लिए किया गया है। इसका अर्थ है कि रातें दसों दिशाओं से अपनी कहानियाँ कहेंगी, यानी हर दिशा से या हर ओर से कहानियाँ सुनाई देंगी।

(ग) फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ थे।

- प्रयोग: इस वाक्य में 'से' का प्रयोग संबंध या संबंध की स्थिति को दर्शाने के लिए किया गया है। 'तौर-तरीकों से' का मतलब है "तौर-तरीकों के संबंध में" या "उनकी आदतों और रीति-रिवाजों के बारे में"। यह दिखाता है कि व्यक्ति फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी उसके तौर-तरीकों से अपरिचित था।

(घ) दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने के गणित जानने वाले की समझ से परे थी।

- प्रयोग: यहाँ 'से' का प्रयोग समानता या तुलना को दर्शाने के लिए किया गया है। 'दो से चार' के गणित का मतलब है "बुनियादी गणितीय समझ से", और 'से' यहाँ एक प्रकार की तुलना दिखा रहा है, यानी यह फिल्म उन लोगों की समझ से परे थी, जो केवल साधारण गणित की समझ रखते हैं।

(ङ) शैलेंद्र राजकपूर की इस याराना दोस्ती से परिचित तो थे।

- प्रयोग: 'से' का यहाँ संबंध या कनेक्शन को दिखाने के लिए प्रयोग हुआ है। इसका मतलब है कि शैलेंद्र राजकपूर की याराना दोस्ती से परिचित थे, यानी वह राजकपूर के दोस्ती के रिश्ते को जानते थे।

सारांश: 'से' के प्रयोग के द्वारा वाक्य में विभिन्न अर्थों का संकेत मिलता है, जैसे दिशा, स्रोत, तुलना, रूप, और संबंध। यह वाक्य की संरचना और अर्थ को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में मदद करता है।

प्रश्न 2. इस पाठ में आए निम्नलिखित वाक्यों की संरचना पर ध्यान दीजिए-

(क) 'तीसरी कसम' फ़िल्म नहीं, सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी।

(ख) उन्होंने ऐसी फिल्म बनाई थी जिसे सच्चा कवि हृदय ही बना सकता था।

(ग) फ़िल्म कब आई, कब चली गई, मालूम ही नहीं पड़ा।

(घ) खालिस देहाती भुच्च गाड़ीवान जो सिर्फ दिल की जुबान समझता है, दिमाग की नहीं।

उत्तर 2- यह वाक्य संरचना में विभिन्न प्रकार के तत्वों का उपयोग करके विचार व्यक्त किए गए हैं। आइए प्रत्येक वाक्य की संरचना पर ध्यान दें:

(क) 'तीसरी कसम' फ़िल्म नहीं, सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी।

- संरचना विश्लेषण:
  इस वाक्य में "नहीं" के प्रयोग से वस्तु की स्पष्टता को दर्शाया गया है। "तीसरी कसम" को फ़िल्म नहीं, बल्कि "सैल्यूलाइड पर लिखी कविता" के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह वाक्य दो भागों में विभाजित है:
  - पहला भाग: "'तीसरी कसम' फ़िल्म नहीं"
  - दूसरा भाग: "सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी"
- यहाँ पर "नहीं" का प्रयोग अस्वीकार (negation) के रूप में हुआ है, जो फ़िल्म के सामान्य रूप से बाहर एक विशिष्ट रूप (कविता) को दर्शाता है।

(ख) उन्होंने ऐसी फिल्म बनाई थी जिसे सच्चा कवि हृदय ही बना सकता था।

- संरचना विश्लेषण:
  इस वाक्य में "जिसे" के प्रयोग से एक संबंध और विशेषता की बात की जा रही है।
  - पहले भाग में "उन्होंने ऐसी फिल्म बनाई थी" में क्रिया (verb) 'बनाई' है, जो मुख्य विचार को व्यक्त कर रही है।
  - दूसरे भाग में "जिसे सच्चा कवि हृदय ही बना सकता था" में 'जिसे' संबंधबोधक सर्वनाम है, जो फिल्म के बारे में विशेषता (केवल कवि हृदय द्वारा बनाई जाने वाली) व्यक्त करता है।
- इस वाक्य में शर्त का भाव है कि यह फिल्म केवल एक सच्चे कवि द्वारा बनाई जा सकती थी, जो किसी सामान्य व्यक्ति से परे है।

(ग) फ़िल्म कब आई, कब चली गई, मालूम ही नहीं पड़ा।

- संरचना विश्लेषण:
  इस वाक्य में "कब" और "मालूम ही नहीं पड़ा" के प्रयोग से समय का अस्पष्टता (uncertainty) व्यक्त की गई है।
  - पहले दो प्रश्नवाचक शब्द "कब आई" और "कब चली गई" समय की अनिश्चितता और भूल को व्यक्त करते हैं, अर्थात फ़िल्म का आना और जाना बहुत सामान्य रूप से हुआ।
  - अंतिम भाग "मालूम ही नहीं पड़ा" में 'मालूम' (जानना) के प्रयोग से यह संकेत मिलता है कि इस घटना का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा या यह बहुत सामान्य था।
- इस वाक्य की संरचना में अज्ञातता और समान्यता का अनुभव होता है।

(घ) खालिस देहाती भुच्च गाड़ीवान जो सिर्फ दिल की जुबान समझता है, दिमाग की नहीं।

- संरचना विश्लेषण:
  इस वाक्य में दो विशेषताओं का वर्णन किया गया है:
  - पहले भाग में "खालिस देहाती भुच्च गाड़ीवान" के रूप में किसी व्यक्ति के विशेष प्रकार को व्यक्त किया गया है (गाड़ीवान जो देहाती है)।
  - दूसरे भाग में "जो सिर्फ दिल की जुबान समझता है, दिमाग की नहीं" में यह व्यक्त किया गया है कि उस व्यक्ति का व्यवहार केवल भावनाओं पर आधारित है, न कि तर्क या दिमागी सोच पर।
- यहाँ पर "जो" (relative pronoun) का प्रयोग किया गया है, जो व्यक्ति के बारे में एक और विवरण जोड़ता है।
- वाक्य की संरचना वर्णनात्मक (descriptive) है, और यह व्यक्ति के मानसिक दृष्टिकोण को व्यक्त कर रही है।

सारांश: इन वाक्यों की संरचना में विभिन्न प्रकार के यथार्थवादी विवरण और विशिष्टताओं का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक वाक्य में एक मुख्य विचार (main idea) के साथ-साथ, उसके आसपास के विवरण (modifiers) को जोड़ने के लिए विभिन्न संयोग, संबंधबोधक शब्द, और क्रियाएँ प्रयोग की गई हैं, जिससे अर्थ स्पष्ट और विस्तृत होता है।

प्रश्न 3. पाठ में आए निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाइए-

चेहरा मुरझाना, चक्कर खा जाना, दो से चार बनाना, आँखों से बोलना।

उत्तर 3:

1. चेहरा मुरझाना

- वाक्य: जब उसने अपनी प्यारी बिल्ली को खो दिया, तो उसका चेहरा मुरझा गया, जैसे उसे कोई गहरी चोट लगी हो।

2. चक्कर खा जाना

- वाक्य: वह गर्मी और थकावट से चक्कर खा कर गिर पड़ा, लेकिन थोड़ी देर बाद उसे होश आ गया।

3. दो से चार बनाना

- वाक्य: उसने मेहनत से काम करके अपने एक छोटे से बिजनेस को दो से चार बना दिया और अब उसका व्यापार खूब चल रहा है।

4. आँखों से बोलना

- वाक्य: वे दोनों चुप थे, लेकिन एक-दूसरे की आँखों से बोल रहे थे, जैसे शब्दों की जरूरत ही नहीं थी।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय दीजिए-

(क) शिद्दत ......

(ख) याराना ....

(ग) बमुश्किल ....

(घ) खालिस ....

(ङ) नावाकिफ़ ....

(च) यकीन ....

(छ) हावी ....

(ज) रेशा ......

उत्तर 4: यहाँ दिए गए शब्दों के हिंदी पर्याय प्रस्तुत हैं:

(क) शिद्दत - गंभीरता, जोश, तीव्रता

(ख) याराना - मित्रता, दोस्ती, स्नेह

(ग) बमुश्किल - कठिनाई से, मुश्किल से, किसी तरह

(घ) खालिस - शुद्ध, असली, निरापद

(ङ) नावाकिफ़ - अपरिचित, अनजान, अनभिज्ञ

(च) यकीन - विश्वास, भरोसा, आत्मविश्वास

(छ) हावी - प्रभुत्व, प्रभावी, दबदबा

(ज) रेशा - तंतु, धागा, महीन कण

प्रश्न 5. निम्नलिखित का संधिविच्छेद कीजिए-

(क) चित्रांकन

(ख) सर्वोत्कृष्ट

(ग) चर्मोत्कर्ष

(घ) रूपांतरण

(ङ) घनानंद

उत्तर 5: यहाँ दिए गए शब्दों का संधिविच्छेद किया गया है:

(क) चित्रांकन

- संधिविच्छेद: चित्र + अंकन
- अर्थ: चित्र बनाना

(ख) सर्वोत्कृष्ट

- संधिविच्छेद: सर्व + उत्कृष्ट
- अर्थ: सबसे श्रेष्ठ

(ग) चर्मोत्कर्ष

- संधिविच्छेद: चर्म + उत्कर्ष
- अर्थ: चमड़े की ऊँचाई (किसी वस्तु के सबसे अच्छे स्तर पर पहुँचने का अर्थ)

(घ) रूपांतरण

- संधिविच्छेद: रूप + अंतरण
- अर्थ: रूप का परिवर्तन

(ङ) घनानंद

- संधिविच्छेद: घन + आनंद
- अर्थ: बहुत अधिक आनंद

प्रश्न 6. निम्नलिखित का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए-

(क) कला-मर्मज्ञ

(ख) लोकप्रिय

(ग) राष्ट्रपति

उत्तर 6- यहाँ दिए गए शब्दों का समास विग्रह और समास का नाम निम्नलिखित हैं:

(क) कला-मर्मज्ञ

- समास विग्रह: कला + मर्मज्ञ
- समास का नाम: द्वंद्व समास
- अर्थ: कला का गहरा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति

(ख) लोकप्रिय

- समास विग्रह: लोक + प्रिय
- समास का नाम: तत्पुरुष समास
- अर्थ: जो सभी लोगों द्वारा प्रिय हो, या लोगों के बीच प्रसिद्ध हो

(ग) राष्ट्रपति

- समास विग्रह: राष्ट्र + पति
- समास का नाम: तत्पुरुष समास
- अर्थ: देश का मालिक या नेता, यानी राष्ट्र का प्रमुख

योग्यता विस्तार

1. फणीश्वरनाथ रेणु की किस कहानी पर 'तीसरी कसम' फ़िल्म आधारित है, जानकारी प्राप्त कीजिए और मूल रचना पढ़िए।

उत्तर 1: 'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी "मारे गए गुलफाम" पर आधारित है। यह कहानी 1954 में प्रकाशित हुई थी और भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कहानी की प्रमुख विशेषता इसमें निहित ग्रामीण जीवन की सादगी, उसकी चिंताएँ और मानवीय भावनाओं का गहरा चित्रण है।

फिल्म का संदर्भ:

'तीसरी कसम' (1966) भारतीय फिल्म उद्योग की एक अद्भुत कृति है, जिसका निर्देशन राज कपूर ने किया था। यह फिल्म "मारे गए गुलफाम" पर आधारित है और इसमें राज कपूर और नंदा प्रमुख भूमिकाओं में थे। फिल्म में एक गाँव के गीतकार और एक नृत्यांगना के बीच होने वाली नाजुक प्रेमकहानी को दर्शाया गया है, जो मूल कहानी के समान है, जिसमें प्रेम और त्याग की भावनाएँ हैं।

मूल रचना - "मारे गए गुलफाम":

कहानी का मुख्य पात्र एक गाँव का युवक है, जो बहुत साधारण जीवन जीता है, लेकिन उसे एक नृत्यांगना से प्रेम हो जाता है। यह प्रेम असंभावित और त्यागपूर्ण है, और अंत में यह उसे अपनी तीसरी कसम की ओर ले जाता है। "तीसरी कसम" नामक कसम उसके प्रेम और जीवन के उच्चतम स्तर के सम्मान का प्रतीक बन जाता है, जिसे वह निभाने के लिए तैयार होता है, चाहे जो भी हो।

आप "मारे गए गुलफाम" की कहानी को पढ़ने के लिए भारतीय साहित्य से जुड़ी पुस्तकें या फणीश्वरनाथ रेणु की रचनावली का सहारा ले सकते हैं। यह कहानी हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों में से एक मानी जाती है।

2. समाचार पत्रों में फिल्मों की समीक्षा दी जाती है। किन्हीं तीन फ़िल्मों की समीक्षा पढ़िए और 'तीसरी कसम' फ़िल्म को देखकर इस फ़िल्म की समीक्षा स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए।

उत्तर 2: तीसरी कसम की समीक्षा लिखने से पहले, फिल्म की कुछ प्रमुख विशेषताएँ और इसकी सांस्कृतिक, सामाजिक और भावनात्मक दृष्टि पर विचार करें। अब हम तीन फिल्मों की समीक्षाओं का उदाहरण ले सकते हैं, और फिर "तीसरी कसम" पर अपनी समीक्षा लिख सकते हैं।

1. शोले **(1975)** की समीक्षा:

शोले भारतीय सिनेमा की एक ऐतिहासिक फिल्म मानी जाती है, जिसमें धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन, हेमा मालिनी, और जीतेंद्र जैसे प्रमुख कलाकार थे। फिल्म का निर्देशन रामेश सिप्पी ने किया था। यह फिल्म एक्शन, संवादों और चरित्रों के लिए प्रसिद्ध है, विशेषकर अमिताभ बच्चन के "जय" और धर्मेंद्र के "वीरू" किरदारों की जोड़ी। फिल्म के संवाद जैसे "जो डर गया, वो मर गया" आज भी लोगों की ज़ुबान पर हैं। फिल्म का संगीत और कहानी भी शानदार थे, जो इसे भारतीय सिनेमा का एक बेमिसाल उदाहरण बनाता है। शोले की समीक्षा में इसकी अत्यधिक लोकप्रियता, संवादों की प्रासंगिकता, और कलाकारों के प्रदर्शन पर ज़ोर दिया जाता है।

2. दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे **(1995)** की समीक्षा:

यह फिल्म आदित्य चोपड़ा द्वारा निर्देशित और शाहरुख़ ख़ान तथा काजोल के अभिनय से सजी एक रोमांटिक ड्रामा है। कहानी एक पारंपरिक भारतीय परिवार और उसके पश्चिमी प्रभावों के बीच संघर्ष की है। फिल्म के गाने, जैसे "Tujhe Dekha Toh" और "Mere Khwabon Mein" आज भी प्रिय हैं। फिल्म को आलोचकों और दर्शकों ने बहुत सराहा, खासतौर पर शाहरुख़ ख़ान और काजोल के रोमांटिक जोड़ी के रूप में। समीक्षाओं में इस फिल्म को भारतीय सिनेमा के लिए एक कालातीत प्रेमकहानी माना गया।

3. लागा चुनरी में दाग **(2007)** की समीक्षा:

यह फिल्म रानी मुखर्जी और कोंकणा सेन शर्मा के प्रमुख किरदारों के साथ एक सामाजिक मुद्दे को प्रस्तुत करती है। फिल्म में एक महिला के संघर्ष और उसके आत्मसम्मान की कहानी दिखाई गई है, जो समाज की नजरों से दूर अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करती है। समीक्षाओं में इस फिल्म को एक संवेदनशील और प्रभावशाली कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें अभिनय और संवेदनाओं को बेहतरीन तरीके से व्यक्त किया गया।

'तीसरी कसम' फिल्म की समीक्षा:

फिल्म का नाम: तीसरी कसम
निर्माता: राज कपूर
निर्देशक: राज कपूर
कलाकार: राज कपूर, नंदा, जगदीप
संगीतकार: शंकर जयकिशन
रिलीज़ वर्ष: 1966

समीक्षा:
'तीसरी कसम' भारतीय सिनेमा की एक बेमिसाल कृति है, जो फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी "मारे गए गुलफाम" पर आधारित है। इस फिल्म का निर्देशन और अभिनय दोनों ही भारतीय सिनेमा के उच्चतम मानकों पर खरे उतरते हैं। राज कपूर ने इस फिल्म में न केवल एक निर्देशक के रूप में बल्कि एक अभिनेता के रूप में भी शानदार प्रदर्शन किया है।

कहानी एक साधारण गाँव के युवक और एक नृत्यांगना के बीच के प्रेम को दर्शाती है। फिल्म की शुरुआत में हमें ग्रामीण जीवन की सादगी और कठिनाइयाँ दिखाई जाती हैं, लेकिन जैसे-जैसे कहानी बढ़ती है, राज कपूर का किरदार अपने जीवन में प्रेम और त्याग के उच्चतम मानकों को स्वीकार करता है। नंदा की अभिनय क्षमता भी इस फिल्म में निखर कर सामने आती है, जिन्होंने अपने किरदार के साथ पूरी तरह न्याय किया है।

'तीसरी कसम' का संगीत भी बहुत प्यारा है, विशेषकर "कोरा कागज़ था" गीत जो आज भी दिलों में बसा हुआ है। फिल्म के दृश्यांकन में भी एक शुद्धता और सहजता है, जो दर्शकों को भारतीय गाँव के जीवन और उसकी भावनाओं से जोड़ता है।

हालांकि, फिल्म में कुछ धीमे पल हैं, लेकिन उसकी भावनात्मक गहराई और अभिनय की उत्कृष्टता इसे एक अनमोल कृति बना देती है। फिल्म का संदेश प्रेम और समर्पण का है, जिसमें कोई न कोई तीसरी कसम जीवन में कभी ना कभी निभानी होती है।

कुल मिलाकर, 'तीसरी कसम' एक संवेदनशील, प्यारी और यादगार फिल्म है जो अपने दर्शकों को प्यार, त्याग और आदर्शों का एक सुंदर उदाहरण पेश करती है। यदि आप भारतीय सिनेमा के शास्त्रीय दौर के प्रेमी हैं, तो यह फिल्म आपको हर लिहाज से प्रभावित करेगी।

परियोजना कार्य

1. फ़िल्मों के संदर्भ में आपने अकसर यह सुना होगा- 'जो बात पहले की फ़िल्मों में थी, वह अब कहाँ '। वर्तमान दौर की फ़िल्मों और पहले की फ़िल्मों में क्या समानता और अंतर है? कक्षा में चर्चा कीजिए ।

उत्तर 1: फ़िल्मों के संदर्भ में यह वाक्य अक्सर सुना जाता है, 'जो बात पहले की फ़िल्मों में थी, वह अब कहाँ', और इसका तात्पर्य यह होता है कि वर्तमान दौर की फ़िल्मों में पहले की तुलना में बहुत कुछ बदल चुका है। वर्तमान और पहले की फ़िल्मों में समानताएँ और अंतर दोनों हैं, जो समय के साथ फ़िल्म उद्योग के विकास को दर्शाते हैं।

समानताएँ:

1. कहानी की मूलभूत आवश्यकता: चाहे वह पहले की फ़िल्में हों या वर्तमान की, दोनों में कहानी की अहमियत है। दर्शक हमेशा एक प्रभावशाली कहानी की तलाश में रहते हैं, जो उन्हें भावनात्मक रूप से जोड़ सके।
2. संगीत: फ़िल्मों में संगीत और गीतों का स्थान हमेशा महत्वपूर्ण रहा है। चाहे पुराने गाने हों या वर्तमान के, संगीत अब भी फ़िल्मों का अभिन्न हिस्सा है, जो दर्शकों के साथ एक गहरा संबंध बनाता है।
3. प्रेमकहानियाँ: अधिकांश फ़िल्मों की थीम में प्रेमकहानियाँ प्रमुख रही हैं। पुरानी फ़िल्मों में प्रेम और समर्पण की कहानी होती थी, वहीं आजकल भी रोमांटिक फ़िल्में बहुत लोकप्रिय हैं, हालांकि उनके प्रस्तुत करने का तरीका बदल गया है।

अंतर:

1. कहानी और विषयवस्तु: पहले की फ़िल्में आमतौर पर पारंपरिक या सामाजिक मुद्दों पर आधारित होती थीं, जैसे परिवार, प्रेम, सामाजिक कुरीतियाँ, और संघर्ष। आजकल की फ़िल्में आधुनिकता, साइंस फिक्शन, हॉरर और फैंटेसी जैसी विविध शैलियों में विकसित हुई हैं। वर्तमान फ़िल्मों में अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों, यथार्थवाद और टेक्नोलॉजी का प्रभाव अधिक है।
2. तकनीकी विकास: पहले के दौर में फ़िल्मों की तकनीकी सीमाएँ थीं। कैमरा और दृश्य प्रभाव सीमित थे। लेकिन आजकल डिजिटल तकनीक, विजुअल इफेक्ट्स (**VFX**), **3D** टेक्नोलॉजी और एडिटिंग की उन्नति ने फ़िल्म निर्माण के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। अब फ़िल्में और दृश्य अधिक यथार्थवादी और आकर्षक होते हैं।
3. अर्थपूर्ण संवाद और अभिनय: पुराने समय की फ़िल्मों में अक्सर विज्ञापनों जैसे संवाद, संवेदनशीलता, और शुद्ध अभिनय देखने को मिलता था, जहां अभिनेता के चेहरे के भाव अधिक महत्वपूर्ण होते थे। आजकल के फ़िल्मों में कॉमर्शियलाइजेशन और रियलिज़्म का प्रभाव है, जो कच्चे और सच्चे तरीके से जीवन को दर्शाता है।
4. दर्शकों की पसंद: पहले की फ़िल्मों में अक्सर शुद्ध परिवारिक मनोरंजन होता था, जहां म्यूजिक और नृत्य के माध्यम से दर्शकों को लुभाया जाता था। अब दर्शक ज्यादा विविधतापूर्ण और सशक्त विषयों को पसंद करते हैं, जैसे समाज में सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण, राजनीति, मनोविज्ञान, आदि।

5. समीक्षा और प्रतिक्रिया: पहले फ़िल्मों के बारे में चर्चा सीमित थी और समीक्षा मुख्य रूप से मीडिया के कुछ हिस्सों तक ही सीमित थी। अब सोशल मीडिया, ब्लॉग्स, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स और ट्विटर जैसी जगहों पर फ़िल्मों की विस्तृत समीक्षाएँ होती हैं, और दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ तुरंत मिल जाती हैं।

कक्षा में चर्चा के लिए विचार:

1. क्या आपको लगता है कि आजकल की फ़िल्मों में परिवार और रिश्तों का उतना महत्व नहीं है जितना पहले था?
2. क्या आप मानते हैं कि पुरानी फ़िल्मों में जो 'सादगी' थी, वह आज की फ़िल्मों में नहीं दिखाई देती?
3. फ़िल्मों में तकनीकी प्रभाव और दृश्य प्रभावों का क्या आपके अनुभव पर असर पड़ता है? क्या ये कहानी के महत्व को कम करते हैं?
4. क्या आप महसूस करते हैं कि पहले की फ़िल्मों में कहीं अधिक नैतिकता और समाज के प्रति जागरूकता थी?

इस प्रकार, वर्तमान और पहले की फ़िल्मों में बहुत कुछ बदल चुका है, लेकिन दोनों में समानता भी मौजूद है। फ़िल्मों का विकास समाज, प्रौद्योगिकी और दर्शकों की रुचियों के अनुसार हुआ है।

2. 'तीसरी कसम' जैसी और भी फ़िल्में हैं जो किसी न किसी भाषा की साहित्यिक रचना पर बनी हैं। ऐसी फ़िल्मों की सूची निम्नांकित प्रपत्र के आधार पर तैयार करें।

क्र.सं.	फ़िल्म का नाम	साहित्यिक रचना	भाषा	रचनाकार
1.	देवदास	देवदास	बंगला	शरतचंद्र
2.	परिणीता	परिणीता	बंगला	शरतचंद्र
3.	गोदान	गोदान	हिन्दी	प्रेमचंद
4.	गाइड	द गाइड	अंग्रेज़ी	आर. के. नारायण

उत्तर 2: यहाँ कुछ ऐसी फ़िल्मों की सूची दी गई है, जो साहित्यिक रचनाओं पर आधारित हैं:

क्र.सं.	फ़िल्म का नाम	साहित्यिक रचना	भाषा	रचनाकार
1.	देवदास	देवदास	बंगला	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय
2.	परिणीता	परिणीता	बंगला	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय
3.	गोदान	गोदान	हिंदी	प्रेमचंद
4.	गाइड	द गाइड	अंग्रेज़ी	आर. के. नारायण

5.	मंटो	मंटो	हिंदी/उर्दू	सआदत हसन मंटो
6.	शतरंज के खिलाड़ी	शतरंज के खिलाड़ी	हिंदी	प्रेमचंद
7.	कज़िन	कज़िन	अंग्रेज़ी	जेन ऑस्टेन
8.	आनंद	आनंद	हिंदी	हरिवंश राय बच्चन
9.	परिणीता (2005)	परिणीता	हिंदी	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय
10.	विक्रम और बेताल	विक्रम और बेताल	संस्कृत	विभिन्न

इन फ़िल्मों ने साहित्यिक कृतियों को फिल्मी रूप में प्रस्तुत किया है और इन्हें साहित्य से प्रेरणा प्राप्त करने वाले दर्शक काफी पसंद करते हैं।

3. लोकगीत हमें अपनी संस्कृति से जोड़ते हैं। 'तीसरी कसम' फ़िल्म में लोकगीतों का प्रयोग किया गया है। आप भी अपने क्षेत्र के प्रचलित दो-तीन लोकगीतों को एकत्र कर परियोजना कॉपी पर लिखिए।

उत्तर 3: लोकगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं और ये न केवल लोक जीवन की सच्चाई को दर्शाते हैं, बल्कि हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। 'तीसरी कसम' फ़िल्म में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है, जो ग्रामीण जीवन की सादगी और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। अगर आप अपने क्षेत्र के लोकगीतों पर परियोजना तैयार करना चाहते हैं, तो यहाँ कुछ लोकप्रिय लोकगीतों का उदाहरण दिया गया है:

1. बिहार का लोकगीत – "नदिया के पार"

यह गीत बिहार और उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत प्रसिद्ध है। यह गीत नदी के किनारे के दृश्य और एक प्रेमी-प्रेमिका की प्रेमकथा पर आधारित होता है।

गीत: नदिया के पार माछलियाँ मारे,
चली आईं परी झुला डाले।
तू ही तू ही मेरी संग चले,
छोड़ के काहे जाएँं।

2. राजस्थानी लोकगीत – "पधारो म्हारे देस"

यह गीत राजस्थान के लोक संगीत का एक शानदार उदाहरण है, जो राज्य की मेहमाननवाजी और सांस्कृतिक गौरव को व्यक्त करता है। यह गीत उन सभी यात्रियों और मेहमानों के लिए है जो राजस्थान में आते हैं।

गीत: पधारो म्हारे देस,
काँची पांव में बिंदिया, रब ने दिया अल्लाह।

नर नारी सब देस में मिलते हैं साड़ी धरा में,
पधारो म्हारे देस।

3. उत्तर भारतीय लोकगीत – "आलि झल्ली तुजे देखू"

यह गीत उत्तर भारत के प्रमुख लोक संगीतों में से एक है, जो विशेष रूप से विवाह और खुशियों के अवसर पर गाया जाता है। इसमें प्रेम और रिश्तों की मिठास को दर्शाया जाता है।

गीत: आलि झल्ली तुजे देखू,
धडकनें दिल की कहे।
तेरी आँखों में बसी है,
मेरी जिंदगी की राहें।

इन गीतों का संग्रह और उनका भावार्थ एकत्र करने से आपको अपने क्षेत्र की लोक संस्कृति और परंपराओं को समझने में मदद मिलेगी। आप इन्हें अपनी परियोजना में शामिल कर सकते हैं।

(पाठ 11 : प्रहलाद अग्रवाल (तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र): पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण दीर्घ, लघु प्रश्न–उत्तर, बहुविकल्पीय प्रश्न, सही या गलत, रिक्त स्थान और सारांश)

पाठ 11: प्रहलाद अग्रवाल (तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र) – सारांश

"तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' – सारांश

इस पाठ में लेखक प्रहलाद अग्रवाल ने प्रसिद्ध गीतकार शैलेंद्र के जीवन, व्यक्तित्व और उनकी फिल्म 'तीसरी कसम' के निर्माण से जुड़े संघर्षों का सजीव चित्रण किया है। शैलेंद्र एक संवेदनशील कवि और गीतकार थे, जिन्होंने फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी *'मारे गए गुलफाम'* को पूरी ईमानदारी से सिनेमा के परदे पर उतारने का साहसिक कार्य किया।

'तीसरी कसम' शैलेंद्र की पहली और अंतिम फिल्म थी, जिसमें राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे श्रेष्ठ कलाकारों ने अभिनय किया और संगीत शंकर-जयकिशन ने दिया। यह फिल्म कलात्मक दृष्टि से तो सफल रही, पर व्यावसायिक स्तर पर उसे वो पहचान नहीं मिली, जिसकी वह हकदार थी। वितरकों ने फिल्म को अपनाने में हिचक दिखाई, प्रचार भी नहीं हो सका, और यह फिल्म बिना शोर-शराबे के आई और चली गई।

शैलेंद्र एक भावुक, आदर्शवादी और आत्म-संतोष को महत्व देने वाले व्यक्ति थे। राजकपूर से उनकी मित्रता गहरी थी और उन्होंने बिना किसी लालच के 'तीसरी कसम' में अभिनय किया। शैलेंद्र दर्शकों की रुचि को परिष्कृत करने में विश्वास रखते थे, वे कभी भी आमफहम सोच या उथलेपन के आगे नहीं झुके।

यह पाठ फिल्म निर्माण की जटिलताओं, सच्चे कला प्रेमियों के संघर्ष और शैलेंद्र जैसे कलाकारों की ईमानदारी व संवेदनशीलता को रेखांकित करता है।

"तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र" पाठ पर आधारित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. प्रहलाद अग्रवाल ने 'तीसरी कसम' को विशेष क्यों माना है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार 'तीसरी कसम' एक ऐसी फिल्म है जो साहित्यिक संवेदना, ईमानदारी और सच्चाई से भरपूर है। यह केवल एक फिल्म नहीं बल्कि सैल्यूलाइड पर लिखी कविता है। इसे कवि हृदय शैलेंद्र ने पूरी निष्ठा से बनाया, जिससे यह फिल्म कला और भावनात्मकता का प्रतीक बन गई। यह फिल्म आज भी यादगार मानी जाती है।

प्रश्न 2. शैलेंद्र के फिल्म निर्माण के पीछे क्या उद्देश्य था?

उत्तर: शैलेंद्र का उद्देश्य केवल धन या प्रसिद्धि अर्जित करना नहीं था, बल्कि उन्हें आत्म-संतोष और कला की सेवा करनी थी। वे एक आदर्शवादी कवि थे, जिन्होंने संवेदनाओं से भरी 'तीसरी कसम' जैसी फिल्म बनाई। उनका मानना था कि सच्चे कलाकार का कर्तव्य है कि वह समाज को अर्थपूर्ण और संवेदनशील कला प्रदान करे।

प्रश्न 3. 'तीसरी कसम' फिल्म को बनाने में शैलेंद्र को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

उत्तर: 'तीसरी कसम' के निर्माण में शैलेंद्र को वितरक नहीं मिल पाए और फिल्म का प्रचार भी बहुत सीमित था। यह फिल्म अधिक व्यवसायिक नहीं थी, इसलिए इसे खरीदने वालों की कमी थी। हालांकि इसमें राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे बड़े सितारे थे, फिर भी इसे वितरकों ने नजरअंदाज किया। यह उनके आदर्शवाद और कला-प्रेम की कठिन परीक्षा थी।

प्रश्न 4. राजकपूर और शैलेंद्र की मित्रता इस पाठ में कैसे उभरकर आती है?

उत्तर: राजकपूर और शैलेंद्र की मित्रता गहरी और भावनात्मक थी। जब शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' की कहानी सुनाई, राजकपूर ने बिना पारिश्रमिक के फिल्म में काम करने की सहमति दी और मजाक में एक रुपये एडवांस मांगा। यह घटना उनकी मित्रता और याराना मस्ती को दर्शाती है। राजकपूर ने एक सच्चे दोस्त की तरह शैलेंद्र को हमेशा प्रोत्साहित किया।

प्रश्न 5. शैलेंद्र को एक कवि-हृदय निर्माता क्यों कहा गया है?

उत्तर: शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' को केवल फिल्म नहीं, बल्कि संवेदना से भरी एक रचना के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी सोच गहराई से भरी हुई थी और वे फिल्म को केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि भावनाओं की अभिव्यक्ति मानते थे। उनकी फिल्म में करुणा, सादगी और आदमियत की झलक साफ दिखाई देती है, इसलिए उन्हें 'कवि-हृदय निर्माता' कहा गया है।

प्रश्न 6. 'तीसरी कसम' की कलात्मक विशेषताएं क्या हैं?

उत्तर: 'तीसरी कसम' में भावपूर्ण गीत, गहरा संदेश, संवेदनशील निर्देशन और उत्कृष्ट अभिनय है। राजकपूर और वहीदा रहमान ने अपनी भूमिकाओं में आत्मा डाल दी। यह फिल्म साहित्यिक कथा 'मारे गए गुलफाम' पर

आधारित है, जिसे अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया। इसका हर दृश्य एक कविता की तरह दर्शकों को छूता है।

प्रश्न 7. शैलेंद्र ने गीतों में संवेदना किस प्रकार व्यक्त की है?

उत्तर: शैलेंद्र के गीत भाव-प्रधान और सरल भाषा में होते हैं। वे दर्शकों के मन को छूते हैं और उनमें मानवीय संवेदनाएं भर देते हैं। उनके गीतों में समाज के प्रति दायित्व और आत्मिक शांति की तलाश दिखाई देती है। 'मेरा जूता है जापानी' जैसे गीतों में भी उन्होंने जीवन के गहरे अर्थ छिपाए हैं।

प्रश्न 8. प्रहलाद अग्रवाल का फिल्म के प्रति दृष्टिकोण कैसा है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल का दृष्टिकोण बेहद गंभीर और साहित्यिक है। वे फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं मानते, बल्कि सामाजिक संदेश और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का साधन मानते हैं। उन्होंने शैलेंद्र और उनकी फिल्म 'तीसरी कसम' के माध्यम से यह दिखाया है कि फिल्में भी साहित्य जितनी प्रभावशाली हो सकती हैं।

प्रश्न 9. 'तीसरी कसम' को दर्शकों तक पहुँचाने में क्या कठिनाइयाँ आईं?

उत्तर: 'तीसरी कसम' को वितरकों की कमी के कारण समय पर प्रदर्शित नहीं किया जा सका। इसमें भव्य प्रचार नहीं हुआ, जिससे दर्शकों को इसके बारे में जानकारी नहीं मिल पाई। इसकी करुणा और संवेदना को आम दर्शक समझ नहीं पाए और व्यवसायिक दृष्टि से यह असफल रही, बावजूद इसके इसकी कलात्मकता आज भी सराही जाती है।

प्रश्न 10. शैलेंद्र की सोच आज के सिनेमा के लिए कितनी प्रासंगिक है?

उत्तर: आज जब सिनेमा अधिक व्यवसायिक होता जा रहा है, शैलेंद्र की सोच अत्यंत प्रासंगिक है। वे कला को आत्मा मानते थे और उसे आदर्शवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते थे। वर्तमान फिल्मकारों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि फिल्में केवल पैसा कमाने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को संवेदनशील दिशा देने का भी ज़रिया हो सकती हैं।

प्रश्न 11. प्रहलाद अग्रवाल के साहित्यिक और शिक्षण जीवन के बारे में बताइए।

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल का जन्म मध्य प्रदेश के जबलपुर में हुआ। उन्होंने हिंदी में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। किशोरावस्था से ही उन्हें हिंदी फिल्मों और उनके इतिहास में रुचि थी। वर्तमान में वे सतना के सरकारी स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक हैं। वे फिल्मों पर गंभीर लेखन करते हैं और इस क्षेत्र को ही अपने लेखन का स्थायी विषय बनाना चाहते हैं।

प्रश्न 12. 'तीसरी कसम' को शैलेंद्र की पहली और अंतिम फिल्म क्यों कहा गया है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' कवि शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फिल्म थी क्योंकि इसके निर्माण में उन्हें आर्थिक और मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। फिल्म भले ही कलात्मक और भावनात्मक दृष्टि से सफल रही, लेकिन व्यावसायिक रूप से असफल रही। इसके बाद शैलेंद्र ने कोई और फिल्म नहीं बनाई, जिससे यह उनकी एकमात्र निर्माता के रूप में फिल्म बनी।

प्रश्न 13. शैलेंद्र के अनुसार 'तीसरी कसम' एक कविता क्यों थी?

उत्तर: शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' को केवल एक फिल्म नहीं बल्कि सैल्यूलाइड पर लिखी कविता माना। इसमें साहित्यिक संवेदनशीलता, भावनात्मक गहराई और कलात्मकता इतनी सुंदरता से पिरोई गई थी कि वह एक दृश्य कविता बन गई। फिल्म में शैलेंद्र की कवि-दृष्टि और आदर्शवादी सोच स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

प्रश्न **14.** राज कपूर और शैलेंद्र की मित्रता का परिचय दीजिए।

उत्तर: राज कपूर और शैलेंद्र की मित्रता अत्यंत आत्मीय थी। 'तीसरी कसम' के निर्माण में राज कपूर ने बिना पारिश्रमिक के अभिनय किया। उन्होंने शैलेंद्र से प्रतीक रूप में एक रुपया लिया और फिल्म में पूरी निष्ठा से कार्य किया। इस घटना से उनकी मित्रता की गहराई और आपसी समझ का परिचय मिलता है।

प्रश्न **15.** 'तीसरी कसम' को एक यादगार फिल्म क्यों माना जाता है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' को एक यादगार फिल्म इसलिए माना जाता है क्योंकि यह साहित्य और सिनेमा का अनूठा संगम थी। इसमें फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी को पूर्ण ईमानदारी से प्रस्तुत किया गया। राज कपूर और वहीदा रहमान के उत्कृष्ट अभिनय और शंकर-जयकिशन के संगीत ने इसे अमर बना दिया। इसकी संवेदनशीलता और कलात्मकता आज भी दर्शकों को आकर्षित करती है।

प्रश्न **16.** शैलेंद्र की फिल्मी सोच और आदर्शों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: शैलेंद्र आदर्शवादी कवि थे। वे फिल्मों में व्यापारिक लाभ से अधिक कलात्मकता और आत्मसंतोष को महत्व देते थे। 'तीसरी कसम' के निर्माण में उन्होंने अपनी संवेदनशीलता, ईमानदारी और साहित्यिक दृष्टिकोण को प्रमुखता दी। वे दर्शकों की रुचियों को सुधारने में विश्वास रखते थे और अपने गीतों में गहराई व भावनात्मकता रखते थे।

प्रश्न **17.** फिल्म 'तीसरी कसम' को व्यावसायिक असफलता क्यों मिली?

उत्तर: 'तीसरी कसम' को व्यावसायिक असफलता इसलिए मिली क्योंकि यह गंभीर और संवेदनशील विषय पर आधारित थी, जो आम दर्शकों की समझ से परे थी। इसके प्रचार-प्रसार पर भी ध्यान नहीं दिया गया। वितरकों ने इसे खरीदने में रुचि नहीं दिखाई, जिससे यह फिल्म दर्शकों तक सही ढंग से नहीं पहुँच पाई, बावजूद इसके कि इसमें बड़े सितारे और उत्कृष्ट संगीत था।

प्रश्न **18.** प्रहलाद अग्रवाल ने शैलेंद्र के किस पक्ष को विशेष रूप से रेखांकित किया है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल ने शैलेंद्र की संवेदनशीलता, ईमानदारी और कलात्मक दृष्टिकोण को विशेष रूप से रेखांकित किया है। उन्होंने बताया कि शैलेंद्र केवल एक गीतकार ही नहीं बल्कि एक भावुक और आदर्शवादी इंसान थे। 'तीसरी कसम' के निर्माण में उनके व्यक्तिगत गुणों की झलक मिलती है, जिसमें उन्होंने अपने कवि-हृदय से काम किया।

प्रश्न **19.** 'तीसरी कसम' को पुरस्कार किन-किन संस्थाओं से प्राप्त हुए?

उत्तर: 'तीसरी कसम' को 'राष्ट्रपति स्वर्णपदक', बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए। इसे मास्को फिल्म फेस्टिवल में भी सराहा गया। ये पुरस्कार इसकी

कलात्मकता, भावनात्मकता और साहित्यिक प्रस्तुति के कारण दिए गए, जो इसे हिंदी सिनेमा की यादगार फिल्मों में शामिल करते हैं।

प्रश्न **20.** शैलेंद्र के गीतों की विशेषताएं क्या थीं?

उत्तर: शैलेंद्र के गीत भाव-प्रधान और सहज होते थे। उन्होंने कभी झूठा अभिजात्य नहीं अपनाया और न ही कठिन भाषा का प्रयोग किया। उनके गीतों में आम आदमी की पीड़ा, प्रेम और संवेदना की झलक मिलती थी। वे दर्शकों की रुचि को सुधारने के पक्षधर थे और अपनी सच्चाई से कभी समझौता नहीं करते थे।

प्रश्न **21.** शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' के लिए वित्तीय संकटों को कैसे झेला?

उत्तर: 'तीसरी कसम' के निर्माण में शैलेंद्र ने अपनी कमाई और बचत सब खर्च कर दी। उन्होंने अपने गीतों की रॉयल्टी तक लगाई और दोस्तों से उधार भी लिया। आर्थिक संकट के बावजूद उन्होंने गुणवत्ता से समझौता नहीं किया। फिल्म के रिलीज़ होने तक वे भारी तनाव में थे और अंततः इसी मानसिक दबाव के चलते उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हुआ।

प्रश्न **22.** वहीदा रहमान ने शैलेंद्र के साथ किस तरह का व्यवहार किया?

उत्तर: वहीदा रहमान ने शैलेंद्र की ईमानदारी और संवेदनशीलता को समझते हुए फिल्म में सहयोग किया। उन्होंने फिल्म की शूटिंग में उत्साह से भाग लिया। अंत में उन्होंने पारिश्रमिक कम करने की इच्छा भी जताई थी, लेकिन शैलेंद्र ने उनका पूरा मेहनताना दिया। इससे दोनों के बीच आपसी सम्मान और स्नेहपूर्ण संबंध का परिचय मिलता है।

प्रश्न **23.** 'तीसरी कसम' फिल्म में संगीत की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: 'तीसरी कसम' में संगीत का अत्यंत भावनात्मक और काव्यात्मक उपयोग हुआ है। शंकर-जयकिशन ने शैलेंद्र के गीतों को मधुर संगीतबद्ध किया। गाने कथानक को आगे बढ़ाते हैं और पात्रों की भावनाओं को व्यक्त करते हैं। गीत 'सजन रे झूठ मत बोलो' और 'पंछी नदिया पवन के झोंके' आज भी श्रोताओं के मन में बसे हैं।

प्रश्न **24.** शैलेंद्र की सिनेमा-दृष्टि को 'तीसरी कसम' में कैसे दर्शाया गया है?

उत्तर: शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' में साहित्य और सिनेमा का सुंदर मेल प्रस्तुत किया। उन्होंने कहानी के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की और उसे उसकी आत्मा के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने फिल्म को एक कविता का रूप दिया, जो उनकी सिनेमा-दृष्टि की संवेदनशीलता, आदर्शवाद और कलात्मकता को दर्शाती है। वे सिनेमा को व्यापार नहीं बल्कि सृजन मानते थे।

प्रश्न **25.** शैलेंद्र की मृत्यु का मुख्य कारण क्या माना जाता है?

उत्तर: शैलेंद्र की मृत्यु का मुख्य कारण 'तीसरी कसम' की असफलता से उपजा मानसिक तनाव था। उन्होंने इस फिल्म के निर्माण में अपनी सारी ऊर्जा, पूंजी और भावनाएं लगा दी थीं। फिल्म की असफलता ने उन्हें गहरा आघात पहुँचाया और इसी तनाव के चलते वे बीमार रहने लगे। अंततः 1966 में वे इस संसार से विदा हो गए।

प्रश्न 26. रेणु ने 'तीसरी कसम' के बारे में क्या कहा था?

उत्तर: प्रेमचंद की परंपरा में लिखने वाले फणीश्वरनाथ रेणु ने 'तीसरी कसम' को अपनी कहानी 'मारे गए गुलफाम' की आत्मा के अनुरूप पाया। उन्होंने फिल्म को देखकर कहा कि यह सच्चाई के साथ बनाई गई है। उन्होंने शैलेंद्र के प्रयासों की सराहना की और फिल्म को एक 'कलात्मक दस्तावेज़' माना जो उनकी कहानी को नई ऊंचाइयों पर ले गया।

प्रश्न 27. शैलेंद्र का गीत लेखन कैसा था?

उत्तर: शैलेंद्र का गीत लेखन सरल, संवेदनशील और भावनात्मक होता था। वे आम आदमी की भाषा में गहराई व्यक्त करते थे। उनके गीतों में सामाजिक यथार्थ, प्रेम, पीड़ा और दर्शन की झलक मिलती थी। उन्होंने कभी बनावटी शैली नहीं अपनाई। उनकी कविताओं में मानवीय संवेदनाएं और जीवन की सच्चाई सहजता से अभिव्यक्त होती थीं।

प्रश्न 28. शैलेंद्र की फिल्मी यात्रा को एक वाक्य में कैसे व्यक्त करेंगे?

उत्तर: शैलेंद्र की फिल्मी यात्रा एक ऐसे कवि की यात्रा थी जिसने सिनेमा को कविता की तरह जिया और सृजन में अपनी आत्मा समर्पित कर दी।

प्रश्न 29. शैलेंद्र की रचनात्मकता का मूल आधार क्या था?

उत्तर: शैलेंद्र की रचनात्मकता का मूल आधार उनकी ईमानदारी, संवेदनशीलता और आम जनमानस से जुड़ाव था। वे अपने गीतों में जीवन की सच्चाइयों को सहज भाषा में व्यक्त करते थे। उनकी रचनाओं में गहराई, भावनात्मकता और साहित्यिक गुणवत्ता मिलती है, जो उन्हें अन्य गीतकारों से अलग करती है।

प्रश्न 30. 'तीसरी कसम' की कहानी का सार क्या है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' एक भोले-भाले गाड़ीवान हीरामन और नौटंकी की नायिका हीराबाई की कोमल प्रेम कहानी है। यह कहानी ग्राम्य जीवन, सादगी और मनुष्यता की सच्चाई को प्रस्तुत करती है। हीरामन की मासूमियत और आदर्शवादी सोच दर्शकों को गहराई से प्रभावित करती है। कहानी में प्रेम, त्याग और मानवीय संबंधों की भावनात्मक प्रस्तुति है।

प्रश्न 31. शैलेंद्र की फिल्मी दृष्टि को व्यावसायिक दृष्टिकोण से अलग कैसे कहा जा सकता है?

उत्तर: शैलेंद्र ने सिनेमा को केवल मनोरंजन या व्यापार का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे एक कला माना। उन्होंने 'तीसरी कसम' में व्यावसायिक सफलता की बजाय कलात्मक सच्चाई को प्रमुखता दी। उन्होंने दर्शकों की रुचि बदलने का प्रयास किया, न कि उसके अनुसार फिल्म को ढालने का। यही उनकी दृष्टि को अन्य निर्माताओं से अलग करती है।

प्रश्न 32. शैलेंद्र को 'आदर्शवादी' क्यों कहा गया है?

उत्तर: शैलेंद्र को आदर्शवादी इसलिए कहा गया है क्योंकि वे मूल्यों और सिद्धांतों से समझौता नहीं करते थे। उन्होंने फिल्म निर्माण में भी साहित्यिक सच्चाई, ईमानदारी और कलात्मकता को प्राथमिकता दी। 'तीसरी कसम' में उन्होंने अपनी संवेदनशीलता को बनाए रखा, भले ही उन्हें आर्थिक नुकसान सहना पड़ा। वे सच्चाई के साथ जीने में विश्वास रखते थे।

प्रश्न **33.** शैलेंद्र और बिमल रॉय के संबंधों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: शैलेंद्र और बिमल रॉय के संबंध घनिष्ठ थे। उन्होंने एक साथ कई फिल्मों में काम किया। शैलेंद्र ने बिमल रॉय की फिल्मों के लिए गीत लिखे। 'तीसरी कसम' में निर्देशक के रूप में बासु भट्टाचार्य का चयन भी बिमल रॉय की शिफारिश पर ही हुआ था। यह उनकी आपसी समझ और सहयोग को दर्शाता है।

प्रश्न **34.** फिल्म निर्माण में शैलेंद्र को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

उत्तर: शैलेंद्र को आर्थिक तंगी, वितरकों की उदासीनता, तकनीकी बाधाओं और मानसिक तनाव जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने व्यक्तिगत पूंजी लगाई और भारी आर्थिक संकट में आ गए। इसके बावजूद उन्होंने गुणवत्ता से समझौता नहीं किया और अंत तक पूरी निष्ठा से काम किया। उनकी यह संघर्षशीलता उन्हें महान बनाती है।

प्रश्न **35.** 'तीसरी कसम' की विशेषता क्या थी जिससे वह अन्य फिल्मों से अलग थी?

उत्तर: 'तीसरी कसम' की विशेषता इसकी साहित्यिकता, सादगी, और भावनात्मकता थी। इसमें कोई बनावटीपन नहीं था। यह आम भारतीय की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती है। इसका कथानक, संगीत और अभिनय सभी कलात्मक रूप से समृद्ध थे। यह फिल्म दर्शकों की आत्मा को छूने वाली सजीव कविता थी, जो अन्य व्यावसायिक फिल्मों से अलग थी।

प्रश्न **36.** शैलेंद्र की ईमानदारी का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर: शैलेंद्र की ईमानदारी का उदाहरण यह है कि उन्होंने वहीदा रहमान को पूरा पारिश्रमिक दिया, जबकि वे स्वयं भारी आर्थिक संकट में थे। जब वहीदा ने पारिश्रमिक कम करने की बात कही तो शैलेंद्र ने मना करते हुए कहा, "आपने मेहनत की है, मैं आपको पूरा पैसा दूंगा।" यह उनकी नैतिकता को दर्शाता है।

प्रश्न **37.** शैलेंद्र का सिनेमा के प्रति दृष्टिकोण आज के दौर में क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: आज के व्यावसायिक सिनेमा में शैलेंद्र की संवेदनशील, साहित्यिक और आदर्शवादी दृष्टि प्रेरणास्पद है। उन्होंने सिनेमा को केवल लाभ का साधन नहीं, बल्कि समाज सुधार और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम माना। आज के फिल्मकार यदि उनके आदर्शों को अपनाएं, तो फिल्मों में संवेदना और साहित्यिक गुणवत्ता लौट सकती है।

प्रश्न **38.** शैलेंद्र के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर: शैलेंद्र के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सच्चाई, संवेदनशीलता और आदर्शों के साथ कार्य करना कठिन जरूर होता है, लेकिन आत्मसंतोष और समाज में आदर प्राप्त होता है। उन्होंने कलात्मकता को महत्व

दिया, भले ही आर्थिक नुकसान झेलना पड़ा। उनका जीवन हमें नैतिकता, मेहनत और ईमानदारी का मूल्य सिखाता है।

प्रश्न **39.** 'तीसरी कसम' का शीर्षक प्रतीकात्मक रूप से क्या दर्शाता है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' का शीर्षक हीरामन के जीवन के तीन संकल्पों को दर्शाता है। हर कठिनाई के बाद वह एक कसम खाता है कि भविष्य में वह ऐसा नहीं करेगा। तीसरी कसम में वह ठानता है कि अब कभी नौटंकी की तवायफ को नहीं बैठाएगा। यह उसकी भावनात्मक चोट और आत्म-संयम का प्रतीक है।

प्रश्न **40.** पाठ के माध्यम से लेखक प्रहलाद अग्रवाल का उद्देश्य क्या है?

उत्तर: लेखक प्रहलाद अग्रवाल का उद्देश्य शैलेंद्र जैसे संवेदनशील, ईमानदार और आदर्शवादी फिल्मकार के व्यक्तित्व को पाठकों के सामने लाना है। वे यह दिखाना चाहते हैं कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि साहित्य और भावनाओं का सुंदर समागम भी हो सकता है। लेखक शैलेंद्र को एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

Some Extra Questions Answers About writer

"लेखक के बारे में कुछ अतिरिक्त प्रश्नोत्तर"

प्रश्न **1:** प्रहलाद अग्रवाल का फिल्मी लेखन में योगदान क्या है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल ने हिंदी फिल्मों और फिल्मकारों पर गहन शोध कर लेखन को नई दिशा दी। वे 'तीसरी कसम' जैसी कलात्मक फिल्मों पर विस्तृत लेखन करते हैं। सतना के शासकीय महाविद्यालय में प्राध्यापक रहते हुए भी उनका लेखनीय योगदान उल्लेखनीय है। प्रहलाद अग्रवाल का लेखन न केवल सूचनात्मक है, बल्कि इसमें भारतीय सिनेमा के इतिहास की संवेदनशील व्याख्या भी होती है।

प्रश्न **2:** शैलेंद्र द्वारा निर्मित 'तीसरी कसम' क्यों यादगार मानी जाती है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' को हिंदी सिनेमा की अमर फिल्मों में गिना जाता है। प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार, यह फिल्म एक सजीव कविता की तरह है। शैलेंद्र ने साहित्यिक कृति को बेहद संवेदनशीलता से परदे पर उतारा। राजकपूर और वहीदा रहमान का अभिनय, शंकर-जयकिशन का संगीत और शैलेंद्र का दृष्टिकोण इसे कालजयी बनाते हैं।

प्रश्न **3:** शैलेंद्र के फिल्म निर्माण में क्या विशेषताएं थीं?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल बताते हैं कि शैलेंद्र एक भावुक और आदर्शवादी कवि थे। उन्होंने व्यावसायिकता से अधिक आत्मसंतोष को महत्व दिया। 'तीसरी कसम' उनकी एकमात्र फिल्म थी, जिसमें उन्होंने सच्चे कवि-हृदय से कार्य किया। वह दर्शकों की रुचियों को परिष्कृत करने के पक्षधर थे और सिनेमा को साहित्यिक संवेदना से जोड़ते थे।

प्रश्न **4:** राजकपूर और शैलेंद्र की मित्रता का फिल्म निर्माण में क्या असर पड़ा?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार, राजकपूर और शैलेंद्र की मित्रता ने 'तीसरी कसम' को संभव बनाया। राजकपूर ने बिना पारिश्रमिक मांगे अभिनय किया और भावनात्मक सहयोग दिया। यह सहयोग दर्शाता है कि फिल्म निर्माण केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि मित्रता, समर्पण और संवेदना का मेल भी होता है।

प्रश्न 5: 'तीसरी कसम' के निर्माण में कौन-कौन सी चुनौतियाँ आईं?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल बताते हैं कि 'तीसरी कसम' का निर्माण आसान नहीं था। वितरकों की अनिच्छा, प्रचार की कमी और व्यावसायिक जोखिम इसके प्रमुख अवरोध थे। हालांकि फिल्म की गुणवत्ता और कलात्मकता उच्च थी, फिर भी यह बाजार के गणित से मेल नहीं खा सकी। शैलेंद्र का आदर्शवाद इन चुनौतियों के बीच भी अडिग रहा।

प्रश्न 6: प्रहलाद अग्रवाल का साहित्यिक और शिक्षण क्षेत्र में योगदान क्या है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल न केवल एक लेखक हैं बल्कि शिक्षण जगत में भी सक्रिय हैं। वे सतना के शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक हैं। हिंदी फिल्म-साहित्य पर उनका लेखन 'सातवाँ दशक', 'राजकपूर: आधी हकीकत आधा फसाना' जैसी पुस्तकों में परिलक्षित होता है। उन्होंने युवाओं को सिनेमा के गहरे अर्थों से परिचित कराने का कार्य किया है।

प्रश्न 7: शैलेंद्र के गीतों में किस प्रकार की संवेदनशीलता देखी जाती है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार, शैलेंद्र के गीतों में मानवीय संवेदनाओं की गहराई झलकती है। 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' जैसी पंक्तियाँ उनके गीतों को विशिष्ट बनाती हैं। वे केवल लोकप्रियता नहीं, बल्कि विचारशीलता को महत्व देते थे। उनकी लेखनी में एक कवि का भावनात्मक संसार परिलक्षित होता है।

प्रश्न 8: 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक क्यों मिला?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल लिखते हैं कि 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक इसलिए मिला क्योंकि यह एक उत्कृष्ट कलात्मक कृति थी। इसमें साहित्य, संगीत और अभिनय का समन्वय था। फिल्म ने भारतीय ग्रामीण जीवन और मानवीय भावनाओं को सजीवता से चित्रित किया, जिससे इसकी प्रतिष्ठा देश-विदेश में बनी।

प्रश्न 9: प्रहलाद अग्रवाल की प्रमुख कृतियों में कौन-कौन सी पुस्तकें हैं?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल की प्रमुख कृतियों में 'सातवाँ दशक', 'राजकपूर: आधी हकीकत आधा फसाना', 'कवि शैलेंद्र: ज़िंदगी की जीत में यकीन', 'प्यासा', 'ओ रे मांझी' शामिल हैं। ये पुस्तकें हिंदी सिनेमा के विविध पहलुओं पर केंद्रित हैं और उनके गहरे शोध और अनुभव का प्रमाण देती हैं।

प्रश्न 10: 'तीसरी कसम' की असफलता के बावजूद वह क्यों महान मानी जाती है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल बताते हैं कि 'तीसरी कसम' को भले ही व्यापारिक सफलता न मिली हो, लेकिन इसकी कलात्मकता और भावनात्मकता इसे महान बनाती है। फिल्म एक संवेदनशील साहित्यिक रचना पर आधारित थी, जिसे शैलेंद्र ने पूरे समर्पण से बनाया। उसकी गरिमा आज भी अमिट है।

प्रश्न **11:** प्रहलाद अग्रवाल का फिल्म समीक्षा दृष्टिकोण क्या है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल फिल्मों को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज का आईना मानते हैं। वे हर फिल्म को उसकी साहित्यिक, सामाजिक और कलात्मक दृष्टि से परखते हैं। उनकी समीक्षाएँ दर्शकों को सोचने पर विवश करती हैं और फिल्म के गहरे अर्थों को उजागर करती हैं।

प्रश्न **12:** फिल्म 'तीसरी कसम' के गीतों की क्या विशेषता है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार, 'तीसरी कसम' के गीत भावनाओं से भरे हुए हैं। शैलेंद्र द्वारा लिखित गीतों में लोकजीवन की झलक और प्रेम की मासूमियत है। शंकर-जयकिशन के संगीत और मुकेश की आवाज़ ने इन्हें अमर बना दिया। गीत कहानी के साथ गहराई से जुड़े हैं।

प्रश्न **13:** 'तीसरी कसम' का निर्माण शैलेंद्र के जीवन पर क्या प्रभाव डालता है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल बताते हैं कि 'तीसरी कसम' का निर्माण शैलेंद्र के जीवन की अंतिम बड़ी रचना थी। इस फिल्म के आर्थिक बोझ और असफलता से वे मानसिक रूप से व्यथित हो गए। एक कवि हृदय निर्माता के लिए यह दुखद अनुभव रहा, पर उनकी कला को अमरत्व मिल गया।

प्रश्न **14:** शैलेंद्र का सिनेमा में योगदान कैसे विशिष्ट था?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार, शैलेंद्र का योगदान विशिष्ट इसलिए था क्योंकि वे सिनेमा को सच्चे साहित्य की तरह जीते थे। उनके गीतों और फिल्म 'तीसरी कसम' में मानवता, प्रेम और करुणा का गहन चित्रण मिलता है। वे मनोरंजन से आगे जाकर संवेदनाओं को सिनेमा के माध्यम से अभिव्यक्त करते थे।

प्रश्न **15:** फिल्म निर्माण में शैलेंद्र के आदर्श क्या थे?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल बताते हैं कि शैलेंद्र व्यापारिक सिनेमा के विरोधी नहीं थे, परंतु वे मानते थे कि सिनेमा को समाज के संवेदनशील पक्ष को दर्शाना चाहिए। वे भावनाओं, सच्चाई और ईमानदारी से प्रेरित थे। 'तीसरी कसम' इसी सोच का प्रमाण है, जो आज भी आदर्श मानी जाती है।

प्रश्न **16:** प्रहलाद अग्रवाल का 'तीसरी कसम' पर क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल मानते हैं कि 'तीसरी कसम' सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। वह इसे सिनेमा के इतिहास की अमूल्य धरोहर मानते हैं। शैलेंद्र का संकल्प, राजकपूर का समर्पण और वहीदा रहमान की भूमिका, इस फिल्म को कालजयी बनाते हैं। यह सिनेमा और साहित्य का अनोखा संगम है।

प्रश्न **17:** प्रहलाद अग्रवाल का लेखन किन विषयों पर केंद्रित है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल का लेखन मुख्यतः हिंदी सिनेमा, फिल्मकारों की जीवनी और उनके कार्यों की विवेचना पर केंद्रित है। वे किशोरावस्था से ही फिल्मों में रुचि रखते हैं और अब तक अनेक गंभीर और शोधपूर्ण कृतियाँ रच चुके हैं। उनकी शैली पाठकों को जानकारी के साथ संवेदना भी देती है।

प्रश्न **18:** 'तीसरी कसम' के संगीत की क्या विशेषता थी?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार, 'तीसरी कसम' का संगीत इसकी आत्मा था। शंकर-जयकिशन के संगीत निर्देशन में शैलेंद्र के गीतों ने फिल्म को अविस्मरणीय बना दिया। गीतों में लोकभावना, करुणा और प्रेम की झलक है। संगीत और बोलों का यह अद्भुत संगम फिल्म को आज भी जीवित बनाए हुए है।

प्रश्न 19: 'तीसरी कसम' को लेकर वितरकों की क्या मानसिकता थी?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल बताते हैं कि 'तीसरी कसम' की संवेदनशीलता और गैर-व्यावसायिक शैली के कारण वितरक इससे दूर रहे। उन्हें इसमें लाभ नहीं दिखा। हालांकि इसमें राजकपूर, वहीदा रहमान जैसे सितारे और लोकप्रिय संगीत था, फिर भी भावनात्मक गहराई को व्यावसायिक नजरिए से नहीं समझा गया।

प्रश्न 20: प्रहलाद अग्रवाल की लेखनी का प्रभाव पाठकों पर क्या पड़ता है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल की लेखनी शोधपूर्ण, संवेदनशील और साहित्यिक दृष्टिकोण से समृद्ध होती है। वे पाठकों को फिल्म के पारंपरिक ज्ञान से आगे बढ़कर उसके गहरे भावार्थ से परिचित कराते हैं। उनका लेखन पाठकों को सोचने पर विवश करता है और सिनेमा को एक कला रूप में देखने की प्रेरणा देता है।

"तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र" पाठ पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: प्रहलाद अग्रवाल कौन हैं और उनका मुख्य लेखन क्षेत्र क्या है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल हिंदी फिल्मों और फिल्मकारों के इतिहास पर लेखन करते हैं। वे सतना के शासकीय महाविद्यालय में प्राध्यापक हैं। उनका लेखन मुख्यतः सिनेमा और उसके रचनाकारों पर केंद्रित है।

प्रश्न 2: प्रहलाद अग्रवाल की प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल की प्रमुख कृतियाँ हैं— *सातवाँ दशक, प्यासा, महाबाज़ार के महानायक, कवि शैलेंद्र, ओ रे माँझी, सुपरस्टार, राजकपूर* आदि।

प्रश्न 3: प्रहलाद अग्रवाल को किस विषय में विशेष रुचि है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल को किशोरावस्था से ही हिंदी फिल्मों के इतिहास, फिल्मकारों के जीवन और उनके अभिनय में विशेष रुचि रही है।

प्रश्न 4: 'तीसरी कसम' फिल्म का शिल्पकार किसे माना जाता है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' फिल्म का शिल्पकार शैलेंद्र को माना जाता है, जिनकी संवेदनशीलता और सच्चे कवि-हृदय ने इस फिल्म को अमर बना दिया।

प्रश्न 5: प्रहलाद अग्रवाल ने शैलेंद्र को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल ने शैलेंद्र को एक भावुक, आदर्शवादी और संवेदनशील रचनाकार के रूप में प्रस्तुत किया है, जिनके लिए आत्म-संतोष सबसे बड़ी पूँजी थी।

प्रश्न 6: 'तीसरी कसम' फिल्म की विशेषता क्या थी?

उत्तर: 'तीसरी कसम' फिल्म साहित्यिक कृति पर आधारित थी। इसमें राजकपूर और वहीदा रहमान का उत्कृष्ट अभिनय और शंकर-जयकिशन का अद्भुत संगीत था।

प्रश्न 7: 'तीसरी कसम' को किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उत्तर: 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक, बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन का सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार और मास्को फिल्म फेस्टिवल में सम्मान मिला।

प्रश्न 8: राजकपूर ने 'तीसरी कसम' में कैसा योगदान दिया?

उत्तर: राजकपूर ने इस फिल्म में बिना पारिश्रमिक काम किया और अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाई, जिससे फिल्म को ऊँचाई मिली।

प्रश्न 9: शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' क्यों बनाई थी?

उत्तर: शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' को आत्म-संतुष्टि और साहित्यिक सृजन की भावना से बनाया था, न कि व्यावसायिक लाभ के लिए।

प्रश्न 10: शैलेंद्र का फिल्म निर्माण में अनुभव कैसा रहा?

उत्तर: शैलेंद्र का अनुभव कठिन रहा। 'तीसरी कसम' के लिए वितरक नहीं मिले, और प्रचार की कमी के कारण फिल्म की सफलता प्रभावित हुई।

प्रश्न 11: प्रहलाद अग्रवाल की लेखन शैली की विशेषता क्या है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल की लेखन शैली तथ्यात्मक, संवेदनशील और शोधपरक है। वे सिनेमा के माध्यम से सामाजिक व सांस्कृतिक विमर्श करते हैं।

प्रश्न 12: प्रहलाद अग्रवाल की शिक्षा कहाँ से हुई?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल ने हिंदी में एम.ए. किया है। वे मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर में जन्मे और वर्तमान में सतना में कार्यरत हैं।

प्रश्न 13: 'तीसरी कसम' फिल्म किस साहित्यिक कृति पर आधारित है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी *मारे गए गुलफाम* पर आधारित है, जिसे शैलेंद्र ने परदे पर उतारा।

प्रश्न 14: प्रहलाद अग्रवाल का लेखन भविष्य में किस दिशा में केंद्रित रहेगा?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल भविष्य में भी फिल्मों और फिल्मकारों के जीवन तथा कार्यों पर लेखन करते रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

प्रश्न 15: 'तीसरी कसम' को दर्शकों ने कैसे ग्रहण किया?

उत्तर: दर्शकों ने 'तीसरी कसम' को उसकी संवेदना और कलात्मकता के लिए सराहा, लेकिन व्यावसायिक प्रचार की कमी से इसे व्यापक सफलता नहीं मिली।

प्रश्न 16: शैलेंद्र ने राजकपूर से पारिश्रमिक कैसे माँगा?

उत्तर: शैलेंद्र ने जब राजकपूर से 'तीसरी कसम' में अभिनय की बात की तो राजकपूर ने हँसी में एक रुपया एडवांस पारिश्रमिक माँगा।

प्रश्न 17: फिल्म 'तीसरी कसम' को खरीदने में क्यों कठिनाई हुई?

उत्तर: 'तीसरी कसम' की संवेदनशीलता व्यापारिक सोच से परे थी, इसलिए वितरकों को यह फिल्म असामान्य लगी और खरीदने में रुचि नहीं दिखाई।

प्रश्न 18: प्रहलाद अग्रवाल किस महाविद्यालय में पढ़ाते हैं?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल सतना के शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

प्रश्न 19: प्रहलाद अग्रवाल की पुस्तक 'कवि शैलेंद्र' का विषय क्या है?

उत्तर: 'कवि शैलेंद्र' पुस्तक में प्रहलाद अग्रवाल ने शैलेंद्र के जीवन, गीतों और फिल्म निर्माण से जुड़े अनुभवों का भावनात्मक चित्रण किया है।

प्रश्न 20: प्रहलाद अग्रवाल की कृति 'प्यासा' किस पर आधारित है?

उत्तर: 'प्यासा' कृति महान निर्देशक गुरुदत्त की जीवन यात्रा और उनके अद्वितीय फिल्म-कला को समर्पित है।

प्रश्न 21: शैलेंद्र का सिनेमा को लेकर दृष्टिकोण क्या था?

उत्तर: शैलेंद्र सिनेमा को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम मानते थे। वे गहराई और भावना के पक्षधर थे।

प्रश्न 22: जयकिशन ने 'श्री 420' के गीत की कौन सी पंक्ति पर आपत्ति की थी?

उत्तर: जयकिशन ने 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पंक्ति पर आपत्ति की थी, पर शैलेंद्र ने उसे नहीं बदला।

प्रश्न 23: 'तीसरी कसम' फिल्म को कविता क्यों कहा गया है?

उत्तर: 'तीसरी कसम' को कविता कहा गया है क्योंकि उसकी भावात्मकता, गीतात्मकता और संवेदना किसी कविता जैसी प्रतीत होती है।

प्रश्न 24: प्रहलाद अग्रवाल की लेखन में फिल्म इतिहास का क्या योगदान है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल फिल्म इतिहास को दस्तावेज़ी रूप देते हैं, जिससे नई पीढ़ी सिनेमा की सांस्कृतिक यात्रा को समझ सके।

प्रश्न 25: 'सातवाँ दशक' पुस्तक किस विषय पर आधारित है?

उत्तर: 'सातवाँ दशक' में प्रहलाद अग्रवाल ने 1970 के दशक की हिंदी फिल्मों, उनके रचनाकारों और प्रवृत्तियों का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 26: शैलेंद्र ने राजकपूर को कहानी सुनाने के बाद क्या अनुभव किया?

उत्तर: शैलेंद्र को शुरुआत में लगा कि राजकपूर पैसा माँग रहे हैं, लेकिन जब उन्होंने एक रुपया माँगा तो वे मुस्करा उठे।

प्रश्न 27: 'तीसरी कसम' के निर्माण में सबसे बड़ी चुनौती क्या थी?

उत्तर: सबसे बड़ी चुनौती थी वितरकों की अनुपलब्धता और प्रचार की कमी, जिससे फिल्म को अपेक्षित दर्शक नहीं मिल सके।

प्रश्न 28: प्रहलाद अग्रवाल के लेखन से छात्रों को क्या लाभ मिल सकता है?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल का लेखन छात्रों को हिंदी सिनेमा के इतिहास, समाज और साहित्य से जुड़े पहलुओं को समझने में मदद करता है।

प्रश्न 29: 'महाबाजार के महानायक' पुस्तक किस पर आधारित है?

उत्तर: यह पुस्तक इक्कीसवीं सदी के सिनेमा और उसके प्रमुख नायकों पर केंद्रित है, जिसे प्रहलाद अग्रवाल ने समर्पण से लिखा है।

प्रश्न 30: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार सिनेमा का क्या उद्देश्य होना चाहिए?

उत्तर: प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने, विचारशीलता जगाने और सांस्कृतिक चेतना का माध्यम होना चाहिए।

"तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र" पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. प्रहलाद अग्रवाल का जन्म कहाँ हुआ था?

A) सतना

B) भोपाल

C) जबलपुर

D) इंदौर

उत्तर: **C)** जबलपुर

2. प्रहलाद अग्रवाल की प्रमुख रुचि क्या रही है?

A) चित्रकला

B) हिंदी फिल्म इतिहास

C) राजनीति

D) समाज सेवा

उत्तर: **B)** हिंदी फिल्म इतिहास

3. प्रहलाद अग्रवाल वर्तमान में कहाँ प्राध्यापन कर रहे हैं?

A) जबलपुर विश्वविद्यालय

B) दिल्ली विश्वविद्यालय

C) शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना

D) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय

उत्तर: **C)** शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना

4. 'तीसरी कसम' किस साहित्यिक कृति पर आधारित है?

A) मैला आँचल

B) रेणु की 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम'

C) गोदान

D) निर्मला

उत्तर: **B)** रेणु की 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम'

5. शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' में किस अभिनेता को प्रमुख भूमिका दी थी?

A) दिलीप कुमार

B) देव आनंद

C) राजकपूर

D) धर्मेन्द्र

उत्तर: **C)** राजकपूर

6. 'तीसरी कसम' की हीरोइन कौन थीं?

A) मधुबाला

B) नूतन

C) वहीदा रहमान

D) मीना कुमारी

उत्तर: **C)** वहीदा रहमान

7. 'तीसरी कसम' को किस सम्मान से नवाज़ा गया?

A) फिल्मफेयर अवॉर्ड

B) राष्ट्रीय पुरस्कार

C) राष्ट्रपति स्वर्णपदक

D) दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

उत्तर: **C)** राष्ट्रपति स्वर्णपदक

8. शैलेंद्र का स्वभाव कैसा था?

A) व्यावसायिक

B) आदर्शवादी और भावुक

C) राजनैतिक

D) कठोर

उत्तर: **B)** आदर्शवादी और भावुक

9. 'तीसरी कसम' को लेकर राजकपूर ने पारिश्रमिक में क्या माँगा?

A) ₹10 लाख

B) ₹1 रुपए

C) मुफ्त काम

D) 50% लाभांश

उत्तर: **B) ₹1** रुपए

10. 'तीसरी कसम' को सिनेमा का क्या रूप कहा गया?

A) नाटक

B) कविता

C) संस्मरण

D) लेख

उत्तर: **B)** कविता

11. 'तीसरी कसम' किस फिल्मकार की एकमात्र निर्माण फिल्म रही?

A) बिमल रॉय

B) शैलेंद्र

C) सुभाष घई

D) राजकपूर

उत्तर: **B)** शैलेंद्र

12. 'तीसरी कसम' का संगीत किसने दिया था?

A) रवि

B) लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल

C) शंकर-जयकिशन

D) एस. डी. बर्मन

उत्तर: **C)** शंकर-जयकिशन

13. शैलेंद्र का असली पेशा क्या था?

A) निर्माता

B) अभिनेता

C) गीतकार

D) पत्रकार

उत्तर: **C)** गीतकार

14. शैलेंद्र को किस गीत की पंक्ति के लिए आलोचना मिली?

A) मेरा जूता है जापानी

B) रातें दसों दिशाओं से कहेंगी

C) कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे

D) दोस्त-दोस्त ना रहा

उत्तर: **B)** रातें दसों दिशाओं से कहेंगी..

15. 'तीसरी कसम' की रचनात्मकता को क्यों सराहा गया?

A) इसके व्यवसायिक पक्ष के लिए

B) इसके नृत्य दृश्यों के लिए

C) उसकी संवेदनशीलता और कलात्मकता के लिए

D) इसके स्पेशल इफेक्ट्स के लिए

उत्तर: **C)** उसकी संवेदनशीलता और कलात्मकता के लिए

16. 'तीसरी कसम' को बेचने में क्या समस्या आई?

A) कहानी कमजोर थी

B) फिल्म में नए कलाकार थे

C) वितरकों की रुचि नहीं थी

D) संगीत लोकप्रिय नहीं हुआ

उत्तर: **C)** वितरकों की रुचि नहीं थी

17. शैलेंद्र ने गीतों में किसका विरोध किया?

A) गहराई

B) ऊँचे शब्द

C) झूठा अभिजात्य

D) परंपरागत भाषा

उत्तर: **C)** झूठा अभिजात्य

18. शैलेंद्र ने किनके साथ मिलकर फिल्म बनाई?

A) बिमल रॉय

B) गुरुदत्त

C) राजकपूर

D) महेश भट्ट

उत्तर: **C)** राजकपूर

19. प्रहलाद अग्रवाल की किस पुस्तक का संबंध राजकपूर से है?

A) मैं खुशबू

B) सुपर स्टार

C) राजकपूर: आधी हकीकत आधा फसाना

D) तानाशाह

उत्तर: **C)** राजकपूर: आधी हकीकत आधा फसाना

20. प्रहलाद अग्रवाल का लेखन मुख्य रूप से किस क्षेत्र पर आधारित है?

A) राजनीति

B) शिक्षा

C) फिल्म और फिल्मकारों का जीवन

D) विज्ञान

उत्तर: **C)** फिल्म और फिल्मकारों का जीवन

"तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र" पाठ पर आधारित प्रश्न **True or False** (सही या गलत)

1. प्रहलाद अग्रवाल का जन्म सतना में हुआ था।

उत्तर: गलत (जन्म *जबलपुर* में हुआ था)

2. 'तीसरी कसम' का निर्देशन बासु भट्टाचार्य ने किया था।

उत्तर: सही

3. शैलेंद्र सिर्फ गीतकार थे, उन्होंने कोई फिल्म नहीं बनाई।

उत्तर: गलत (उन्होंने *'तीसरी कसम'* का निर्माण किया था)

4. 'तीसरी कसम' रेणु की एक कहानी पर आधारित फिल्म है।

उत्तर: सही

5. राजकपूर ने 'तीसरी कसम' में कोई भूमिका नहीं निभाई।

उत्तर: गलत (राजकपूर मुख्य भूमिका में थे)

6. वहीदा रहमान 'तीसरी कसम' की नायिका थीं।

उत्तर: सही

7. 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था।

उत्तर: सही

8. शैलेंद्र बहुत व्यावसायिक सोच वाले व्यक्ति थे।

उत्तर: गलत (वह *भावुक और आदर्शवादी* थे)

9. 'तीसरी कसम' पूरी तरह से व्यवसायिक रूप से सफल रही थी।

उत्तर: गलत (यह *व्यवसायिक रूप से असफल* रही)

10. शैलेंद्र को फिल्म के नुकसान से गहरा मानसिक आघात पहुँचा।

उत्तर: सही

11. प्रहलाद अग्रवाल फिल्म निर्देशकों पर आधारित पुस्तकें लिखते हैं।

उत्तर: सही

12. 'राजकपूर: आधी हकीकत आधा फसाना' प्रहलाद अग्रवाल द्वारा लिखी गई किताब है।

उत्तर: सही

13. शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' में अभिनय भी किया था।

उत्तर: गलत (उन्होंने *निर्माण* किया, अभिनय नहीं)

14. फिल्म 'तीसरी कसम' की कहानी में ग्रामीण भारत की खुशबू है।

उत्तर: सही

15. शैलेंद्र के गीतों में आम आदमी की भावना दिखाई देती है।

उत्तर: सही

16. 'तीसरी कसम' का संगीत शंकर-जयकिशन ने दिया था।

उत्तर: सही

17. शैलेंद्र केवल राजकपूर की फिल्मों के लिए गीत लिखते थे।

उत्तर: गलत (उन्होंने *कई अन्य फिल्मों* में भी गीत लिखे)

18. वितरकों ने 'तीसरी कसम' को खरीदने में रुचि नहीं दिखाई।

उत्तर: सही

19. 'तीसरी कसम' के लिए राजकपूर ने पारिश्रमिक में ₹10 लाख लिए थे।

उत्तर: गलत (उन्होंने *सिर्फ ₹1* लिया था)

20. शैलेंद्र ने सिनेमा को एक कला रूप माना, न कि सिर्फ व्यापार।

उत्तर: सही

रिक्त स्थान भरिए –प्रहलाद अग्रवाल (तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र) पर आधारित

1. शैलेंद्र का असली नाम __________ था।

   उत्तर: शंकरदास केसरीलाल

2. शैलेंद्र ने फिल्म __________ का निर्माण किया था।

   उत्तर: तीसरी कसम

3. 'तीसरी कसम' की कहानी प्रसिद्ध लेखक __________ की थी।

   उत्तर: फणीश्वरनाथ रेणु

4. 'तीसरी कसम' में नायक की भूमिका __________ ने निभाई थी।

   उत्तर: राजकपूर

5. 'तीसरी कसम' की नायिका __________ थीं।

   उत्तर: वहीदा रहमान

6. 'तीसरी कसम' का निर्देशन __________ ने किया था।

   उत्तर: बासु भट्टाचार्य

7. फिल्म 'तीसरी कसम' को __________ पुरस्कार से नवाजा गया था।

   उत्तर: राष्ट्रपति स्वर्ण पदक

8. शैलेंद्र के गीतों में आम आदमी की __________ झलकती है।

   उत्तर: भावना

9. 'तीसरी कसम' में संगीत __________ ने दिया था।

   उत्तर: शंकर-जयकिशन

10. शैलेंद्र __________ और संवेदनशील व्यक्ति थे।

    उत्तर: भावुक

11. 'तीसरी कसम' के निर्माण से शैलेंद्र को भारी __________ हुआ।

    उत्तर: आर्थिक नुकसान

12. शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' के लिए राजकपूर को सिर्फ __________ रुपये दिए थे।

    उत्तर: एक

13. शैलेंद्र को __________ का सच्चा प्रेमी कहा गया है।

    उत्तर: लोक जीवन

14. 'तीसरी कसम' का प्लॉट एक __________ के जीवन पर आधारित है।

    उत्तर: बैलगाड़ीवान

15. शैलेंद्र को फिल्म निर्माण में __________ अनुभव नहीं था।

    उत्तर: कोई भी पूर्व

16. 'तीसरी कसम' की कहानी में ग्रामीण भारत की __________ बसती है।

    उत्तर: सुगंध

17. शैलेंद्र का मानना था कि सिनेमा __________ का माध्यम होना चाहिए।

    उत्तर: कला

18. फिल्म के वितरकों ने 'तीसरी कसम' को __________ की वजह से नकारा।

    उत्तर: अव्यावसायिक रूप

19. प्रहलाद अग्रवाल ने 'राजकपूर: __________' नामक पुस्तक लिखी है।

    उत्तर: आधी हकीकत आधा फसाना

20. शैलेंद्र की मृत्यु फिल्म 'तीसरी कसम' के __________ के बाद हुई।

    उत्तर: वाणिज्यिक असफलता